ISSN No. 2581-3528

# केशव संवाद

अंक : 1 नवम्बर-2026 RNI No. UPHIN/2000/03766 ₹ : 20



## श्री विजयादशमी उत्सव

RSS 101 वर्ष



# कथन



असफलता से निराश होने के बजाय चिंतन, प्रयास और प्रयोग के माध्यम से आगे बढ़ना चाहिए। सफलता मिलने पर माता-पिता, शिक्षकों, मित्रों और समाज के योगदान को कभी नहीं भूलना चाहिए। सच्ची सफलता वही है, जिसमें व्यक्ति स्वयं आगे बढ़ने के साथ दूसरों को भी आगे बढ़ने में मदद करे। वर्ष 2047 तक विकसित भारत के निर्माण के राष्ट्रीय लक्ष्य को साकार करने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

– द्रौपदी मुर्मू, राष्ट्रपति

भारत का युवा हर बुलंदी को छूने के लिए उत्साहित है। युवाओं के हौसले के सामने कोई लक्ष्य बड़ा नहीं है। यही युवा शक्ति भारत को दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आज युवा अंतरिक्ष, सैटेलाइट तकनीक, रक्षा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में नए प्रयोग कर रहे हैं। छोटे शहरों और गाँवों के युवा भी नए विचारों के साथ देश की प्रगति में योगदान दे रहे हैं।

– नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री





हमें अपने स्वार्थ और इस चिंता से ऊपर उठकर काम करना चाहिए कि हमें क्या मिलेगा। अपनी पूरी शक्ति लगाकर देश और समाज के हित में योगदान देना ही सच्चा संकल्प है। अपनी कमाई का कुछ हिस्सा जरूरतमंदों के लिए, अपना समय समाज के लिए और अपने प्रयासों को प्रकृति, जंगल, पशुओं तथा कृषि के संरक्षण के लिए समर्पित करना चाहिए। यही महापुरुषों के आदर्शों को सच्चे अर्थों में जीवित रखना है।

–डॉ. मोहन भागवत, सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

राष्ट्र की उन्नति के लिए प्रत्येक व्यक्ति को निस्वार्थ भाव से तन, मन और धनपूर्वक योगदान देना चाहिए। देशसेवा केवल युद्ध, प्राकृतिक आपदा या संकट के समय ही नहीं, बल्कि प्रतिदिन और हर पल होनी चाहिए। किसान, व्यापारी, शिक्षक, विद्यार्थी या किसी भी क्षेत्र में कार्य करने वाला व्यक्ति अपने काम को राष्ट्रहित से जोड़कर देखे और विचार करे कि वह अपने कार्य को और बेहतर बनाकर देश की प्रगति में कैसे योगदान दे सकता है।

–दत्तात्रेय होसबाले, सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ





स्वच्छता कर्मियों का सम्मान करना हम सभी का दायित्व है। जब लोग सुबह सोकर भी नहीं उठते, तब ये स्वच्छता मित्र अपने परिवार को छोड़कर सड़कों और मोहल्लों की सफाई में जुट जाते हैं। उनके परिश्रम से ही हमें स्वच्छ वातावरण मिलता है और हमारा समाज रहने योग्य बनता है। स्वच्छता कमह्न निष्ठा और मेहनत से स्वच्छता अभियान को आगे बढ़ाते हैं। हमें उनके योगदान का सम्मान करना चाहिए। –योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

# केशव संवाद

**RNI No. UPHIN/2000/03766**

**ISSN No. 2581-3528**

1 नवम्बर, 2026

वर्ष : 26 अंक : 11



**सलाहकार समिति**

उदयभान सिंह, रविन्द्र कुमार चौहान
रविन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मुकेश कुमार

**संपादक**

कृपाशंकर

**कार्यकारी संपादक**

प्रोफेसर (डॉ.) नीलम कुमारी

**प्रबंध निदेशक**

डॉ. अनिल कुमार निगम

**प्रबंध संपादक**

पंकज राणा

**पृष्ठ संयोजन**

वीरेंद्र पोखरियाल



**संपादकीय कार्यालय**

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201309
फोन न. 0120 4565851
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित



इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक


## विषय सूची


आवरण ..... 05
सोशल मीडिया में ट्रेंडिंग हिन्दुत्व ..... 10
सरसंघचालक -ध्येय वाक्य ..... 11
अंतरराष्ट्रीय जगत में हिन्दुत्व ..... 12
बोलते न्यायालय ..... 13
एनसीआर समाचार ..... 14
भारत की सीमाएं एवं सुरक्षा ..... 15
उत्तर प्रदेश की सुर्खियां ..... 16
लव जिहाद ..... 17
प्रेरणा विमर्श - 2026 ..... 18
युवा संवाद ..... 20
उद्बोधन ..... 21
महान क्रांतिकारी ..... 22
वीरांगनाएं ..... 23
खेल समाचार ..... 24
पुस्तक समीक्षा ..... 25
हिन्दुत्व के समाचार ..... 26
उत्तर प्रदेश के अनुकरणीय कार्य ..... 27
उत्तर प्रदेश के प्रमुख तीर्थ ..... 28
एआई ..... 29
आत्मनिर्भरता ..... 30
फिल्म समीक्षा ..... 31
यंग अचीवर्स ..... 32
बाल कहानी/कविता ..... 33
पाठक कोना ..... 34


पाठकगण आपसे आग्रह है कि नीचे दिए गए **QR CODE** को स्कैन कर केशव संवाद पत्रिका के सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से भी जुड़े।

@keshavksamvad | @KeshavSamvad | @KeshavSamvad | @KeshavSamvad

# शताब्दी से शत संकल्प तक : युवा शक्ति, पंच परिवर्तन और आत्मनिर्भर भारत

**"राष्ट्र का उत्थान केवल आर्थिक प्रगति से नहीं, बल्कि समाज की एकात्मता, नागरिकों के चरित्र, स्वदेशी चेतना और कर्तव्यबोध से होता है।"**

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शताब्दी भारत की सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक समरसता और राष्ट्रनिर्माण की यात्रा का महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। यह अवसर केवल सौ वर्षों की यात्रा का स्मरण नहीं, बल्कि सेवा, समर्पण और राष्ट्रीय पुनर्जागरण के संकल्पों को नई ऊर्जा देने का भी है। 20 अक्टूबर 2026 को नागपुर में विजयादशमी के अवसर पर सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी के उद्बोधन ने युवा शक्ति और सामाजिक परिवर्तन पर विचार प्रस्तुत किए। इसका संदेश है कि विकसित भारत के लिए विचारों के साथ आचरण, प्रगति के साथ उत्तरदायित्व और तकनीक के साथ नैतिक विवेक आवश्यक है।

आज भारत के सामने अपनी सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखते हुए विज्ञान, तकनीक, उद्यमिता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बनने की चुनौती है। इस परिवर्तन की सबसे बड़ी शक्ति युवा पीढ़ी है। भारत की युवा आबादी तभी राष्ट्रीय सामर्थ्य बनेगी, जब उसमें आत्मविश्वास, अनुशासन, नवाचार, परिश्रम और कर्तव्यबोध विकसित होगा। युवाओं को अवसर, प्रतिभा को सम्मान और सपनों को सही दिशा मिले, तो विकास यात्रा नई ऊँचाइयाँ प्राप्त कर सकती है। युवा केवल भविष्य के नागरिक नहीं, वर्तमान के परिवर्तनकारी वाहक हैं। उनकी ऊर्जा को व्यक्तिगत सफलता से आगे बढ़ाकर ग्रामीण विकास, वैज्ञानिक अनुसंधान, सामाजिक समरसता और जनकल्याण से जोड़ना होगा। राष्ट्रप्रेम केवल भावना नहीं, बल्कि अपने ज्ञान, कौशल और श्रम को देशहित में समर्पित करने की जीवनदृष्टि है। असफलताओं से विचलित होने के बजाय धैर्य, अनुशासन और निरंतर प्रयास से आगे बढ़ना ही कर्मयोग का व्यावहारिक स्वरूप है।

सामाजिक परिवर्तन के लिए पंच परिवर्तन की अवधारणा महत्त्वपूर्ण है। इसके पाँच आयाम-सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, स्व-बोध एवं स्वदेशी तथा नागरिक कर्तव्य। समाज के व्यवहार में सकारात्मक बदलाव लाने की प्रेरणा देते हैं। सामाजिक समरसता प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा और सहभागिता सुनिश्चित करती है। कुटुंब प्रबोधन परिवार को संस्कारों की प्रथम पाठशाला मानता है। पर्यावरण संरक्षण प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व जगाता है, जबकि स्व-बोध एवं स्वदेशी सांस्कृतिक पहचान और स्थानीय उत्पादन पर विश्वास बढ़ाते हैं। नागरिक कर्तव्य संविधान, कानून और सार्वजनिक संपत्ति के प्रति सजगता का आग्रह करता है। इन संकल्पों की सार्थकता तभी है, जब वे दैनिक जीवन का हिस्सा बनें। तकनीकी क्रांति के दौर में विकास के साथ विवेक भी आवश्यक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल माध्यम शिक्षा, स्वास्थ्य, अनुसंधान तथा उत्पादकता को गति दे सकते हैं। किंतु उनका उपयोग भ्रम और असत्य फैलाने के बजाय ज्ञान तथा जनकल्याण के लिए होना चाहिए। तकनीक की उपयोगिता उसके नैतिक और उत्तरदायी इस्तेमाल में निहित है।

युवाओं को केवल रोजगार पाने वाला नहीं, बल्कि रोजगार सृजित करने वाला, समस्याओं का समाधान खोजने वाला और पहल करने वाला नागरिक बनना होगा। भारत की स्टार्टअप संस्कृति युवाओं की नवाचार क्षमता का प्रमाण है। कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, रक्षा, अंतरिक्ष और हरित ऊर्जा में नए प्रयोग आत्मनिर्भरता के अवसर बढ़ा रहे हैं। छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों की प्रतिभाओं को वित्त, प्रशिक्षण, तकनीक और बाजार उपलब्ध कराना इस प्रक्रिया को व्यापक बना सकता है। आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश, आत्मनिर्भर भारत की महत्त्वपूर्ण आधारशिला है। कृषि, हस्तशिल्प, वस्त्र, खाद्य प्रसंस्करण, पर्यटन और लघु उद्योगों में राज्य की व्यापक संभावनाएँ हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, स्थानीय उद्यमिता और महिला सशक्तीकरण से इन्हें उपलब्धियों में बदला जा सकता है। स्वदेशी का अर्थ केवल स्थानीय उत्पाद अपनाना नहीं, बल्कि गुणवत्ता, नवाचार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा की क्षमता विकसित करना भी है।

संघ की शताब्दी का वास्तविक संदेश उत्सव से आगे बढ़कर सतत सामाजिक परिवर्तन में निहित है। संकल्प संस्कार बनें, संस्कार व्यवहार बनें और व्यवहार राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य का आधार बने, यही पंच परिवर्तन का मर्म है। विकसित, समरस और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण किसी एक संस्था या सरकार का नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का सामूहिक दायित्व है।

# श्री विजयादशमी उत्सव, नागपुर

**(आश्विन शु. 10 युगाब्द 5128 – मंगलवार दिनांक 20 अक्तूबर 2026)**

## श्री विजयादशमी उत्सव 2026 के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी द्वारा दिया गया उद्‌बोधन।




राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शताब्दी के कार्यक्रमों के समापन के अवसर पर विजयादशमी उत्सव मनाने के लिए हम आज यहां एकत्रित हैं। यह वर्ष संत शिरोमणि रविदास जी महाराज के 650 वे जन्म जयंती वर्ष के निमित्त कार्यक्रमों का वर्ष है। संघ शाखाओं में भी इस अवसर पर संत रविदास जी के जीवन और कार्य की जानकारी देने वाले कार्यक्रम हो रहे हैं। उनके द्वारा परिश्रम, तपस्या, त्याग, व स्वयं के जीवन के उदाहरण से समाज में भक्ति, स्वधर्मनिष्ठा तथा सामाजिक समरसता का भाव जागरण, ऐसे समय किया गया, जब देश विदेशी आक्रान्ताओं के एतद्देशीय धर्म को मानने वाले देशवासियों पर अत्याचार से पीड़ित था। स्वयं के उपदेश तथा जीवन से संत रविदास जी की दी हुई सीख आज भी हम सबके लिए प्रेरक तथा पथदर्शक है। स्वधर्म रक्षा के लिए ही जिन महापुरुषों ने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया ऐसे दो महापुरुषों के भी स्मरण का यह वर्ष है। आर्यसमाज के तपस्वी संन्यासी, प्रखर धर्माभिमानी, ज्ञानी शिक्षाविद्, वीर स्वातंत्र्यसेनानी तथा शुद्धि आन्दोलन के जनक स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान को 100 साल पूरे हुए। उत्कल के वन प्रदेश में स्वयं रहकर जिन्होंने वहां के अपने समाज की निरूस्वार्थ सेवा की और वहीं पर अपना बलिदान भी दिया ऐसे स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती जी महाराज की भी जन्म शताब्दी चल रही है। महात्मा फुले जी का भी 200वां जन्म जयंती वर्ष पिछले 11 अप्रैल से शुरू हो गया है। जिस स्व की रक्षा के लिए इन महापुरुषों के बलिदान हुए, उसी आत्मबोध को समाज में स्वदेशी मेलों के द्वारा जागृत करने का प्रयास करने वाले 'हिन्दू मेला' के प्रेरक व प्रवर्तक, बंग भूमि के स्वर्गीय श्रीमान राज नारायण बसु के भी जन्म का 200वां वर्ष चल रहा है ।

संघ का कार्य भी गत 100 वर्षों से भारत को इसी स्व के, अस्मिता के, मजीवे के आधार पर संगठित व बलसंपन्न करने के लिये चला है । संघ की शतकपूर्ति के उपलक्ष्य में, जीवनपरिवर्तन की कारक जिन पांच पहलों को, पहले स्वयंसेवकों में प्रवर्तित किया गया व बाद मे समाज में स्वयंसेवक प्रवर्तित करेंगे, उन में एक यही स्व का बोध व स्वदेशी के आचरण की पहल है।

**अपने 'स्व' बोध की नींव :** हमने अपने देश के संविधान में अपने आप को एक प्रजा के रूप मे, विविधता के बावजूद भावनात्मक दृष्टि से एकरस समाज के रूप में, 'हम भारत के लोग' ऐसा, संबोधित किया है। उस भावनात्मक बंधन को उत्तरोत्तर दृढ़ बनाते जाने का दिग्दर्शन भी स्पष्ट शब्दों में उसी संविधान के मार्गदर्शक तत्त्वों में है। उस भावनात्मक बंधन को जिस तत्व की प्रत्यक्ष अनुभूति जन्म देती है, वह अनुभूति तथा उसे स्पष्ट करने वाला विश्व का सर्वोत्कृष्ट तत्वज्ञान हमारे पास होनेपर भी; हमारा व्यवहार उससे एकदम अलग और निकृष्ट हुआ। इसीलिए विश्वगुरु पद से हम इतने नीचे गिरते आए कि अनेक शतकों तक हमें गुलामी झेलनी पड़ी। अनेक भीमप्रयासों से तथा बलिदानों से उन दुर्दिनों से मुक्त होकर अब हम फिर एक बार अपनी एकता व प्रगति की राह पर चल पड़े हैं। इसलिए हमें अपनी विस्मृति को दूर कर उस तत्व को भी स्पष्ट रूप से समझना पड़ेगा, मन से स्वीकार करना पड़ेगा तथा उसके अनुरूप गुणवत्ता का स्वयं के जीवन के सभी आयामों में निर्माण करना पड़ेगा । देश की स्वाधीनता के लिये जितनी तपस्या व समर्पण हुआ उससे कहीं अधिक की आवश्यकता अब पड़ेगी, यह परिस्थिति को हम देखते हैं तो ध्यान में आता है ।

भारत जैसे, मत, पंथ, संप्रदाय, प्रान्त, जाति, भाषा, खानपान, रीतिरिवाज, आदि विविधताओं से भरपूर देश में जो विचार इन सभी को स्वीकार करता है, सम्मान देता है, अपनेपन से देखता है, वही हमारी एकता का आधार बन सकता है। सौभाग्य से भारत में सनातन काल से चलती आई परम्परा, जो अनेक आध्यात्मिक महापुरुषों की प्रत्यक्ष अनुभूतियों से निरन्तर स्पष्ट व पुष्ट होती आयी है, वह हमें बताती है कि सृष्टि की विविधता जितनी स्वाभाविक परन्तु परिवर्तनशील है उतनी ही

सम्पूर्ण अस्तित्व की एकता शाश्वत, अटल व अचल सत्य है । मनुष्य विचारशील प्राणी होने के नाते उस एकता को स्वयं में तथा जगत में अनुभव कर सकता है । यह करने से ही शाश्वत व नित्य सुख के खोज की जीवमात्र की यात्रा सफल व पूर्ण होती है।

"इसी सत्य को विविध पक्ष से
वेदों में हमने गाया था,
निकट बिठाकर इसी तत्व को
उपनिषदों में समझाया था ।
मंदिर - मठ - गुरुद्वारे जाकर
यही ज्ञान सत्संग मिलेगा"

सभी विविधताओं का सम्मान, स्वीकार, करते हुए उन को संरक्षण देने का भारत का स्वभाव तथा जो परिवर्तनीय एवं/अथवा कालविसंगत है उसे बदलते रहने का लचीलापन इसी सनातन दृष्टि का परिणाम है। जब-जब भारत के जनों में यह भाव सर्वोच्च रहा तब-तब भारत विश्व का सभी दृष्टि से आदर्श राष्ट्र रहा। जब आत्मविस्मृति, विघटन व परस्पर संपर्क टूटने के कारण हम बलहीन, संकुचित, अहंकारी अथवा भयग्रस्त हो गये, हमने इस आचरण को त्याग दिया, तब हमारी दुर्गति हुई। हमें अपने अस्तित्व व अस्मिता के इस आधार को फिर से स्मरण करते हुए संगठित व परस्पर हित के लिए कटिबद्घ होना होगा ।

**संघ शताब्दी के कार्यक्रम :** शताब्दी के निमित्त संघ की शाखाओं के व स्वयंसेवकों के संपर्क के विस्तार के लिए कार्यक्रम किये गए। साथ साथ देश में तथा विश्व में भी भारत, हिन्दू व संघ के बारे में व्यापक प्रबोधन की योजना को भी क्रियान्वित किया गया। कार्यक्रमों का अबतक प्राप्त हुआ वृत्त इस प्रकार है- संपर्क अभियान -4,61,527 ग्रामों एवं 41,076 नगरीय बस्तीयों में 10,19,88,511 घरों में संपर्क किया गया। प्रबुद्ध नागरिक गोष्ठी -1,117 जिलों में हुए गोष्ठियों में 4,26,497 नागरिक (महिला + पुरुष) उपस्थित रहे। सद्भावना बैठक-5,036 खण्डों में संपन्न हुई। हिन्दू सम्मलेन- 34,187 मंडलों में समपन्न हुए। युवा सम्मेलनों में 39,25,225 युवा उपथित रहे।

संघ के कुछ कार्यकर्ताओं के प्रवास पश्चिम के तथाकथित विकसित देशों में भी वहां के समाजों में भारत, हिंदुत्व तथा संघ के बारे में सही जानकारी देने की दृष्टि से हुए। वहां भी हमारी सनातन, सर्वसद्भावी भारतीय संस्कृति, हिन्दुसमाज की सर्वसमावेशकता, तथा संघ के उद्देश्य व कार्य की सही व सत्य जानकारी सब के सम्मुख रखी गयी। विश्व में भारत के प्रति एक कुतूहल जाग रहा है। जड़वाद, व्यक्तिवाद तथा संयम रहित उपभोग पर आधारित अधूरी दृष्टि के कारण भौतिक दृष्टि से सम्पन्न होते हुए भी वे देश चिंता में हैं। विविधताओं को कैसे संभालना, विकास व पर्यावरण को कैसे साथ चलाना, जो अपने जैसे नही हैं उनसे अपनेपन से कैसे बरतना, कुटुंबजीवन के तथा नई पीढ़ियों में संस्कारों के क्षरण को कैसे रोकना आदि समस्याओं का उत्तर उनके पास नहीं है। इसीलिए विश्व आज भूराजनैतिक तनावों के, आर्थिक अनिश्चितता के, पर्यावरणीय संकट के और वर्चस्व की लड़ाई में विनाश को देख रहा है। भारत के पास इन सब समस्याओं के सारे उत्तर हैं यह वे जानते हैं। इस लिए हमारे कार्यकर्ताओं के कथनों को वहां अच्छी तरह सुना गया, व चर्चाएं भी चल पड़ी हैं। देश में तथा विश्व में शताब्दी के निमित्त प्रारम्भ हुआ सब प्रकार का संवाद आगे भी सतत व निरंतर चलता रहे ऐसी योजना बनाने में कार्यकर्ता लगे हैं।

पंच परिवर्तन की पाँचों पहलों का यथा -समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण, स्व बोध व स्वदेशी और नागरिक अनुशासन समाज के सभी वर्गों तथा स्तरों में स्वागत हुआ है। विश्व के अन्य देशों में भी इसकी आवश्यकता अनुभव की गयी है। यह केवल एक वर्षभर का कार्यक्रम नहीं अपितु जीवन में आचरण का परिवर्तन लाने वाली व्यवहार की शैली है। प्रत्यक्ष कृति से आदत व आदतों से स्वभाव बनाने वाले यह कार्य जीवन के सभी आयामों में सतत चलाने होंगे, तब परिवर्तन आयेगा। हमारे समाज में संस्कारों के द्वारा इस प्रकार के, विश्व की धारणा करने वाले धार्मिक जीवन की आदतों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाया जाता रहा है ।

**विवेकशील आचरण की आवश्यकता :** वर्तमान काल में परिवार के बड़ों से, विद्यालयों के पाठ्यक्रम से अथवा समाज के वातावरण से यह संस्कार मिलना दिन-प्रतिदिन कम हो रहा है। विज्ञान और तकनीकी की प्रगति के कारण सब प्रकार की जानकारी, समाचार समाज माध्यमों के द्वारा सबको मिलती है। अनेक देशों में नई पीढ़ी को उन माध्यमों से मिलती हुई जानकारी बिना उचित-अनुचित का विवेक किये नई पीढ़ी ग्रहण करती है। उसके दुष्परिणामों का अनुभव ले चुकने के बाद उन देशों ने उन माध्यमों पर कुछ अनुशासन और निर्बंध लागू किये है। हमारे अपने देश में भी इस प्रकार की आवश्यकता, विशेषतः 'OTT platforms' को लेकर, समाज में अनुभव की जा रही है। शासन प्रशासन को इसका विचार करना चाहिये। साथ ही जानकारी स्वरूप में मिलती हो तो भी उचित-अनुचित का विवेक करना नई पीढ़ी को सिखाना पड़ेगा। उस विवेक के अनुपस्थिति के कारण व्यक्तिगत, पारिवारिक व सामाजिक जीवन में कई प्रकार के दुष्परिणाम देखने को मिलते है। इस विवेक के अभाव में ही विश्वभर में नई पीढ़ी नशीली दवाओं की आदत की शिकार हो रही है। नशा एक गंभीर राष्ट्रीय समस्या है और उसके परिहार के लिए समय रहते शासन-प्रशासन तथा समाज को प्रयास प्रारम्भ करने चाहिए। समाज की वर्तमान अभिभावक पीढ़ी को यह विवेक नई पीढ़ी को देना पड़ेगा व नई पीढ़ी को अपनेआप को ऐसी आदत निर्माण करने वाले सभी प्रवृत्तियों से दूर रखना पडेगा। इस दृष्टि से भारत में इस समस्या का निराकरण करने वाले सभी को साथ लेकर देशभर में इस समस्या का निदान करने वाला एक देशव्यापी प्रतिरोध खडा हो इसलिए स्वयंसेवक प्रयास करेंगे।

आने वाले समय में परमवैभव संपन्न विश्वगुरु भारत के निर्माण का बड़ा दायित्व नई पीढ़ी के कंधे पर ही आने वाला है। इस चुनौती को स्वीकार कर सफलता पूर्वक उसका उत्तर देने के लिए हमारे युवाओं को सब प्रकार से सन्नद्ध होना चाहिए।

**संतुलित व समग्र विकास की दृष्टि :** विज्ञान और तकनीकी की प्रगति मनुष्यों को भौतिक दृष्टि से सुखी जीवन जीने में, जीवन में ज्ञान

और तर्क के आधार पर अपने व्यवहार को निर्दोष करने में मदद करती है। इसलिए नए ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी का स्वागत और स्वीकार करना चाहिए। परन्तु यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि तकनीकी केवल साधन है। केवल उपभोगवादी अथवा जड़वादी दृष्टिकोण से विकास होता है तो सुख सुविधा के साथ उससे बड़ी हानि मोल लेनी पड़ती है। हाल ही में नेपाल में जिस भयंकर त्रासदी को झेलना पडा, हजारों मनुष्यों की बली चढ़ गयी, उसके मूल में कहीं ना कहीं सम्पूर्ण हिमालय के क्षेत्र में जो भारत, तिब्बत, भूटान, चीन ऐसे अनेक देशों से गुजरता है, में चले ऐसे एकांगी विकास का परिणाम है। इतनी बड़ी मात्रा में मनुष्य हानि का दुःख हम सभी को अनुभव होता है और त्रासदी के बाद के पीड़ितों को राहत पहुंचाना आदि कार्यों में तो हम सब लगते ही हैं परन्तु विकास की समग्र व संतुलित दृष्टि निर्माण होना आवश्यक है। साधन का योग्य दिशा में उपयोग करने वाला, उपयोग के औचित्य, अनौचित्य को तय करने वाला तो मनुष्य होता है। इसलिए ज्ञान के या तकनीकी के साथ-साथ ही उसका उचित उपयोग हो ऐसा विवेक और उसके उपयोग का नैतिक व भौतिक अनुशासन भी सीखकर आचरण में लाना चाहिए। अन्यथा परमाणुओं के रचना के ज्ञान से स्वच्छ ऊर्जा से ज्यादा जीवन संहारक अस्त्र निकलेंगे व कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे अत्यंत उपयोगी तंत्रज्ञान से भी मनुष्य को भ्रमित करने वाले, ठगने वाले, झूठ के उपक्रम निकलते रहेंगे।

भारत की सनातन, अपनी समग्रता व एकात्मकता के कारण बनी जीवन दृष्टि इसीलिए समन्वय व संयम के संस्कारों की संस्कृति को सम्पूर्ण विश्व में देखना चाहती है। उसको हमारे पूर्वजों ने 'सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा' ऐसा संबोधित किया है। भारत को इस दृष्टि के आधार पर समग्र, एकात्म विकास का अपना नया प्रतिमान उदाहरण के रूप में दुनिया के सामने खडा करना ही होगा।

**हिन्दू भाव व हिन्दू स्वभाव - एकता का आधार :** हमारे राष्ट्र की चेतना यही सनातन दृष्टि है जिसे आज हम भारत के लोगों सहित सारा विश्व हिन्दू दृष्टि के नाम से जानता है। कोई विशिष्ट पूजा पद्धति, कोई विशिष्ट खान-पान, रहन-सहन, कोई सामाजिक या राजनीतिक मतवाद किसी विशिष्ट जाति, भाषा, प्रान्त इस की अनिवार्यता इसमें नहीं हैं। इन सब से उपर आध्यात्मिकता, मानवता तथा विश्वबन्धुत्व ही इस के लक्षण हैं। भारतीयों में इस भाव के विद्यमान होने से ही 'भा' याने ज्ञान के प्रकाश में रत भारत यह भारतीयता की एक परिभाषा बनी है। पूरे विश्व को जोड़ सकने वाले व जोड़ना चाहने वाले इस हिन्दू भाव का स्मरण व पोषण भारत के प्रगति व एकता की अनिवार्य आवश्यकता है। भारत में इस भाव का रूप उत्कट भारत भक्ति, हम सभी भारतीयों में अपनी समान पूर्वज परंपरा का गौरव एवं आदर्श तथा भारत की सनातन संस्कृति के मूल्यबोध के अनुरूप स्वयं के जीवन को गढ़ते जाना यह है। प्राचीन काल से भारत भूमि पर निवास करने वाला जनसमूह इसी दृष्टि को लेकर एक समाज के नाते जीता आया है।

**हम सभी भारतवासियों की एकता - स्वाभाविक व बिना शर्त :** हम सब का परस्पर नाता व भारत के साथ सम्बन्ध यह एक जीवमान सम्बन्ध हैं जो हृदय का होने से बिनाशर्त है। 'तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहे न रहें' ऐसा एकतरफा है। अपनेपन के, आत्मीयता के अथवा रिश्ते-नातों के संबंधों में कोई शर्तें नही होती। बस, उन संबंधों के आधार पर पक्का रहना होता है। हमारे स्वाधीनता सेनानियों का राष्ट्र के प्रति ऐसा ही सम्पूर्ण बिनशर्त समर्पण रहा, तभी ब्रिटिश सरकार को भारत छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इसी हिन्दू भाव को जगाकर सम्पूर्ण समाज को एक सुसंगठित व बलसंपन्न समाज बनाने के लिए कार्य कर रहा है। व्यक्तिजीवन से विश्वजीवन तक की धारणा, प्रतिष्ठा तथा सुरक्षा भी बिना सामर्थ्य के संभव नही। अतएव संगठित व बलसंपन्न हिन्दूसमाज की बात करना या उसके लिए कार्य करना सर्व पंथ समादर की भावना अथवा राष्ट्र की भावनिक एकात्मकता के विरुद्ध नही है; हिंदू समाज का विचार व स्वभाव समावेशक होने के नाते ऐसा कार्य हम सब की भावनिक एकात्मता, सद्भावना व सदाचार का पोषक ही होगा यह बात समझनी चाहिए। पीढ़ी दर पीढ़ी मिलता रहा यह स्वभाव व संस्कार ही कैप्टेन स्मित मच्छार को अपनी प्राणों की बाज़ी लगाकर मनुष्यों के संरक्षण के लिए स्वयं को झोंक देने की प्रेरणा देता है।

**सद्भावनापूर्ण व्यवहार आवश्यक :** यह केवल विचार या वाणी की बात नहीं है। हम सभी के आचरण में यह भाव प्रकट होना चाहिए। हमारा भारत विशाल है। प्रकृति व पर्यावरण के विविध रूपों से सजा है। विविध पंथ, प्रान्त, भाषा, जाति, खानपान व रीति रिवाजों के मानने वाले समूहों से भरा बहुरंगी परंतु एक समाज है। परस्पर व्यवहार में, मन वचन कर्म में सद्भावना और अपनापन होना व दिखना चाहिए। गत काल के इतिहास से मनमे पड़ी एक दूसरे के प्रति आशंकाएं हमें दूर रखती है। इतिहास के उन तथ्यों को स्वीकार करते हुए भी गांठे सुलझ जाएँ, नयी न पड़े, ऐसा व्यवहार हमारा चाहिए। छोटी-छोटी बातों पर हमें उकसाकर झगड़े खड़े करने-कराने वाले लोगों से दूर रहना चाहिए। इतने बड़े व विविधतापूर्ण समाज में यह वातावरण उत्पन्न होने में समय लगेगा। परन्तु देश व विश्व के कल्याण की इच्छा रखने वाले सभी को धैर्यपूर्वक अपने आप को तथा समाज को सम्हालते हुए कार्य करते रहना पड़ेगा। समाज के लोगों से बरतते हुए, हम सर्व साधारण व्यक्तियों से लेकर तो शासन-प्रशासन के लोगों तक, विशेषकर कोई विशिष्ठ अभियान अथवा नीति को समाज में लागू करने की बात होती है, तब अपना व्यवहार भद्र रहे, अपनेपन का रहे, नागरिक व्यक्तियों के सम्मान आदि का लिहाज करने वाला होना चाहिए यह ध्यान रखना चाहिए।

इधर-उधर घटने वाली कुछ अवांच्छित तथा/अथवा अप्रत्याशित घटनाओं को; जिन में संघ का न सम्बन्ध है न समर्थन; ले कर संघ की सद्भावना या हेतु की प्रामाणिकता पर संदेह उत्पन्न करने के प्रयास भी होते रहते है । संघ के कार्य का आधार शुद्ध सात्त्विक प्रेम है। संघ का कार्य स्वयंसेवकों के समर्पण एवं सेवा - परिश्रम के कारण चलता है। संघ को अपने स्वयं के लिए कुछ नहीं चाहिए। एक सत्य को लेकर उसकी प्रतिस्थापना के लिये श्रद्धा विश्वास पूर्वक स्वयंसेवक लक्ष्य पूर्ण होने तक

कार्य करते रहेंगे।

आप सब की अच्छी तरह समझी इन बातों को इस लिए दोहरा रहा हूं क्योंकि समझदार लोग भी विचलित हों ऐसा वातावरण है अथवा खड़ा किया जा रहा है। भारत सहित सारे विश्व में जो भद्रता, मांगल्य, सांस्कृतिक व मानवीय संस्कार है, वह सारा नष्ट-भ्रष्ट, उद्ध्वस्त करने की आसुरी प्रतिज्ञा लेकर पश्चिम से एक आंधी चली है। विश्व भर के तथाकथित प्रगत देश भी उस से त्रस्त, असहाय है। परन्तु पिछले दशकों में भारत ने स्वयं की शक्ति तथा सुनीति के कारण विश्व में धीरे धीरे अपना स्थान बनाया है। भारत के समाज का पुरुषार्थ सुदृढ़ नीतियाँ, नेतृत्व, देशाभिमान तथा विश्व के प्रति अपने दायित्व के बोध की जागृति के कारण सभी क्षेत्रों में यशस्वी हो रहा है। भारत की इस प्रकार की प्रगति के कारण विश्व के राष्ट्रों में अराजकता खडी कर अपने स्वार्थों की पूर्ती के लिए सहाय्यक हो सकने वाले अपने पिट्ठुओं को वहां स्थापित करने का षडयंत्र करने वाली ताकतों के खेल बंद होंगे। इस वस्तुस्थिति को ये आसुरी ताकतें जानती हैं। इसलिए भारत ही उस का निर्णायक व सब से बलवान प्रतिस्पर्धी और अंतिम एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। भारत, हिंदू व संघ को किस प्रकार तोड़ सकते हैं (dismantling) इस का विचार कर योजना बना कर वे कार्य करती हैं। उन्हीं की प्रकृति के कुछ लोग इसमें उन्हें सहायता के लिये मिल जाते हैं। क्षुद्र सत्तास्वार्थ तथा विवेकहीनता के कारण कुछ महत्वाकांक्षी नेता लोग भी शामिल होते हैं। अपने इतने बड़े समाज में समस्याएँ तो हैं। व्यवस्था की कमियां भी ढेर सारी होंगी। उनके चलते आंदोलनों का होना भी स्वाभाविक ही है। परन्तु आंदोलन समाधान देने के लिए होने चाहिए। आन्दोलन करने वाला समाज का कोई समूह हो, शांति व सुव्यवस्था कायम रखने के लिए कार्यवाही करने वाला शासन-प्रशासन या राजनीतिक नेतागण हो, अपने एक अखंड समाज में हमारी करनी के कारण किसी प्रकार की अनबन, द्वेष, त्वेष, मलाल या विभाजन पैदा नहीं होना चाहिए, भावनाएं तीव्र होने पर भी हमारे संविधान कानून की मर्यादा में, बोल चाल चलन के भद्र व्यवहार के संकेतों की मर्यादा में हमारी कृतियाँ हों, यह ध्यान रखना चाहिए ।

वोट, सस्ती लोकप्रियता अथवा राजनीतिक लाभ का लोभ हमारे विवेक व सद्भावना पर हावी न हो यह चिंता करनी ही पड़ेगी।

**समाज के उद्यम से समाधान :** समाज की सब समस्याएं शासन ही सुलझा सकता है अथवा आन्दोलनों से ही समस्याएं सुलझती हैं ऐसा भी अनुभव नहीं है। समाज की सक्रियता व आपसी संवाद के आधार पर भी समस्याओं का समाधान निकल सकता है।

संघ के स्वयंसेवक समाज में इस प्रकार का सामाजिक उद्यम खड़ा करने का प्रयास करते हैं। ग्रामीण विद्यालयों को ध्यान में रखते हुए स्वयंसेवकों के ऐसे प्रयासों का अनुभव उत्साहवर्धक है। 21 प्रान्तों के 210 जिलों में लगभग 1296 विद्यालयों में यह देखा गया कि जहां ग्रामवासियों का सहभाग व स्वयंसेवकों का साथ रहा वहां छात्रों की उपस्थिति, सीखने का स्तर तथा अभिभावकों की सहभागिता में सुधार आया। समाज ने शिक्षा सहायता तथा आधारभूत सुविधाओं के साथ साथ खेल व सांस्कृतिक तथा मूल्य आधारित गतिविधियों में भी योगदान दिया। ग्रामवासियों के सम्मिलित प्रयासों के आधार पर गावों के समग्र विकास के प्रयास तो हजारों ग्रामों में चल ही रहे हैं। देश भर में स्वयंसेवकों द्वारा चलने वाले सभी सेवा कार्यक्रमों में अपने देशबंधुओं में स्वाभिमान, स्वावलम्बन तथा राष्ट्र के जीवन में सहयोग - सहभाग की भावना बलवती बने; तथा उसे चरितार्थ करने की शक्ति एवं क्षमता उन्हें प्राप्त हो यह प्रयास होता है।

**सजगता की आवश्यकता :** इन प्रयासों के पीछे, समाज व देश को चलाने की जिम्मेदारी हमारी भी है, क्योंकि यह देश व समाज मेरा अपना है, यह अपनेपन की प्रेरणा रहती है। आंदोलनों के पीछे भी यही प्रेरणा होनी चाहिए। परन्तु जब ऐसी स्थिति न होकर आंदोलन राजनीति का साधन बन जाता है, किसी व्यक्ति, समूह या विचार के प्रति विरोधी शत्रुभाव लेकर चलता है तब इसका लाभ भारत को दबाना चाहने वाली शक्तियां लेती हैं। मतभेदों को और गहरा बनाकर मनभेद उत्पन्न करना, समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में अन्यायग्रस्तता की (victimhood) भावना उत्पन्न करना आदि करते हुए देश में देश की व्यवस्थाओं के बारे में अश्रद्धा उत्पन्न करना, कलह, उग्र असंतोष, अलगाव, अव्यवस्था व अराजकता का वातावरण बनाना यह उनकी कार्यपद्धति है। भारत को दबाये रखना चाहने वाली विश्व की शक्तियां भी कभी कभी इसमें अपना खेल करती रहती हैं। श्रीमती आशा भोसले जी के गाए, श्री पी. सावळाराम रचित एक बहुत पुराने मराठी गीत की आखरी पंक्तियाँ याद आती है।

"वाढवीत भेदभावा दुष्टतेचा फिरतो कावा
गाठूनिया भोळ्या जीवा अंधारात घालिल घावा"

(भोले-भाले लोगों को पकड़ कर भेद भाव बढ़ाते हुए दुष्टता अंधेरे में से आघात कर रही है।)

इसलिए - "चित्त नित्य सावध ठेवा एक लक्ष्यि लावून डोळे"

(सावधान हों कर लक्ष्य पर केंद्रित हो जाएँ।)

स्पष्ट है कि ऐसी विभेदकारी प्रवृत्तियों के द्वारा निर्मित बुद्धिभेद के चपेट से बचते हुए अपनी परस्पर सद्भावना की रक्षा करनी होगी । सावधान रह कर किसी प्रकार से उद्वेलित, उत्तेजित न होते हुए, भारत को विश्वगुरु पद पर देखने की अपनी आकांक्षा व लक्ष्य नित्य ध्यान में रखते हुए हमें प्रयासरत रहना होगा। आत्मीयता, अनुशासन तथा अपने राष्ट्रीय



ध्येय के प्रति निष्ठा पर मजबूती से टिका समाज ही एकता को पाता है, तथा अपराजेय शक्ति को पाता है। संघ की यह प्रतीति है कि अपने समाज ने प्राचीन काल में अस्तित्व की एकता के सत्य को साक्षात किया, व इसी एकता की अनुभूति समय-समय पर विश्व को देने हेतु सभी का स्वीकार, सम्मान व प्रतिष्ठा करने वाले बहुरूप परन्तु एकरस जीवन को हमारा समाज जीता आया है।

**एकता के सूत्रों पर दृढ़ रहें :** हमारे समाज के इस जीवन ध्येय को हमने ध्यान में रखा तब हम सभी विजयी हुए । जब लहर्ड कर्जन ने बंगाल को हिंदू से मुसलमान को अलग करने के लिए विभाजित करना चाहा तब एक भूमि व एक समाज को सांप्रदायिक आधार पर बांटने का विरोध समाज से डट कर हुआ, ब्रिटिश सत्ता को अपना विभाजन का प्रस्ताव वापस लेना पड़ा। उसी एकता व देशभक्ति के प्रतीक के रूप मे उस समय 'वन्दे मातरम्' का उदय हुआ। विभाजन परास्त हो गया। ऐसा 1947 में क्यों नही हो पाया? क्यों कि हम विशिष्ट हैं इसलिए हम अलग थलग हैं, हम अलग दिखते हैं इसलिए अलग ही हैं यह विचार; हमें बांट कर लड़ाते रखना चाहने वालों ने हमारे मन में बिठा दिया। सांप्रदायिक कट्टरपंथी विचारधारा के प्रभाव से हमने भी यह मन बना लिया कि अलग दिखते हैं इसलिए वास्तव में भी हम एक नही, अलग ही है। अलगाव, राजनीतिक वर्चस्व की लालच तथा स्वार्थ सिद्धि के संयुक्त जुनून में हम, हमें एक बनाकर रखने वाले आधारों को क्रमशः नकारते चले गए। तुष्टीकरण की मानसिकता के कारण हमें तोड़ने वाली इस मानसिकता को हवा मिलती गई। देश विभाजन तक हो गया। लेकिन जिस शान्ति तथा अलग, स्वायत्त अस्तित्व के सुख की आशा दिखा कर यह दुष्टता का विभाजनकारी खेल किया गया, वह सुख-शान्ति तो मिली नहीं; उल्टे सीमा पर तथा देश में सदा के लिए अशांति, परस्पर अविश्वास, असुरक्षा व छोटे-छोटे कारणों से कलह हमने मोल लिया। बंग भंग के विभाजनकारी षडयंत्र को परास्त करने वाला वन्देमातरम आज भी वही एकता की प्रेरणा देने में सशक्त है। वह अपना राष्ट्रगीत है। उसे स्वाभिमान से, उच्च कंठ से तथा संपूर्ण गाने में कोई संकोच या विरोध नहीं होना चाहिए।

भारत की मातृभूमि के नाते भक्ति, हमारे समान भारतीय पूर्वजों के जीवन का गौरव व अनुकरण तथा हमारी सनातन भारतीय संस्कृति के वैश्विक मानवीय मूल्यों के अनुसार अपने जीवन को ढालना यह हम सबको सदा एक रखते आये हैं। सभी पंथ, प्रान्त, भाषा, जाति आदि विविधताओं के अविरोधी तथा उनके परे यह सारे आधार हैं। इनके नित्य परिशीलन से इनको समझना व मन से अपनाना हमारी एकता के साथ साथ हम प्रत्येक की विशिष्टता को भी पुष्ट करते रहेगा। अपनी छोटी पहचानों पर खतरे की आशंकाओं से अथवा उनके अहंकार में भ्रमित हो कर; हमारी एकता के इन आधारों को छोड़ कर, बार बार वहीं ठोकर खाने की गलती हमें नहीं करनी चाहिए।



अपने अपने छोटे अहंकार, अपने स्वयं की तथा अन्य लोगों की उपासनाओं के बारे में पाले हुए भ्रम तथा विविधताको अलगाव मानने की प्रवृत्ति को हमें त्यागना ही पड़ेगा । भारत भक्ति, पूर्वज गौरव तथा भारतीय संस्कृति के हम सभी को जोड़ने वाले इस त्रिसूत्र को मन से अपनाते हुए देश के लिए जीने की राह पर बढ़ना होगा ।

**भारत का वैश्विक दायित्व व हमारे कर्तव्य :** जिन समस्याओं के कारण आज विश्व त्रस्त एवं आतंकित है, उनके मूल में जीवन के दृष्टिकोण का अधूरापन है, वरना पुरुषार्थ के मामले में हम भी शेष विश्व से बहुत कुछ सीख सकते हैं। उन बातों को सीखने के साथ साथ अपनी राष्ट्रीयता का स्पष्ट स्वरूप समझते हुए उसको अंगीकार कर, अपनी एकता व गुणवत्ता को संजोकर, हम संगठित पुरुषार्थ में जुट जाए यह आवश्यक है। धर्म तत्व से विकास के पथ को सर्वांगपरिपूर्ण बना कर दुनिया को सुख और शांति की नई राह दे सकने वाला भारत खड़ा करना है। हमें अपने राष्ट्रीय मूल्यों के आधार पर सम्पूर्ण विश्व को एक नया विकास पथ अपने उदाहरण से देना है । हम जीवन में जो भी करेंगे, वह गुणवत्ता में उत्कृष्ट ही होगा, समाज व देश की सुरक्षा, एकात्मता, सामाजिक न्याय एवं प्रगति - प्रतिष्ठा के लिए उचित ही होगा यह सजगता रखनी होगी। भारत का परमवैभव तथा विश्वगुरुत्व हममे से प्रत्येक के पुरुषार्थ से सिद्ध होनेवाला है। दूसरा कोई भी पर्याय अथवा छोटा रास्ता (shortcut) उपलब्ध नहीं है। अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक जीवनव्यवहार में नित्य छोटी-छोटी सत्कृतियों के द्वारा परिवर्तन लाते हुए सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी अपने कर्तव्य का पालन कर सकता है। पंच परिवर्तन की पहलें व स्वयंसेवकों द्वारा चलायी गयी गतिविधियां इसी पद्धति से व्यक्ति को देशसेवा व भक्ति की राह पर कदम कदम बढ़ाती है।

अपने कार्य के शतवार्षिकी के कार्यक्रमों को व लक्ष्यों को पूर्ण करने के पश्चात समाज की यह संगठित पुरुषार्थी विजयशालिनी शक्ति खड़ी करने की ओर संघ बढ़ेगा।

"साध्य करना है हमे केशव प्रदर्शित ध्येय सपना ।
बस उसी की पूर्ति के हित हो समर्पित जन्म अपना ।।
तुष्ट माँ होगी तभी तो विश्व में सम्मान पा कर ।
बढ़ रहे हैं चरण अगणित बस इसी धुन में निरंतर ।।
ध्येय के पथ पर निरंतर"।।

।। भारत माता की जय ।।

# सोशल मीडिया पर हिन्दू धर्म से सम्बंधित ट्रेंडिंग समाचार

संकलनकर्ता – प्रकाश श्रीवास्तव



17 **सितम्बर** 2026 – **यूट्यूब और समाचार :** देश भर के औद्योगिक क्षेत्रों, कारखानों और तकनीकी संस्थानों में विश्वकर्मा पूजा की तस्वीरें और लाइव आरती के वीडियो अत्यधिक साझा किए गए, जहां सनातन परंपरा के तहत औजारों और शिल्पकला की पूजा को दिखाया गया।

19 **सितम्बर** 2026 – (Twitter) : राधा अष्टमी के पावन अवसर पर विशेष रूप से मथुरा, वृंदावन और बरसाना के भव्य उत्सव, बधाई संदेश और भक्तिमय रील्स सोशल मीडिया पर #RadhaAshtami के साथ शीर्ष पर ट्रेंड कर रहे थे।

25 **सितम्बर** 2026 – (Twitter) **व इंस्टाग्राम :** अनंत चतुर्दशी पर 'लालबागचा राजा' और देश के अन्य बड़े पंडालों की भव्य विसर्जन यात्राओं के वीडियो #GanpatiBappaMorya के साथ दुनिया भर में ट्रेंड हुए, जिसने सनातन उत्सवों की भव्यता को वैश्विक मंच पर दिखाया।

27 **सितम्बर** 2026 – **यूट्यूब और फेसबुक :** पितृ पक्ष के शुभारंभ पर प्रमुख वैदिक विद्वानों और संतों द्वारा सनातन धर्म में पूर्वजों के प्रति सम्मान जताने की परंपरा के वैज्ञानिक और आध्यात्मिक महत्व को समझाने वाले वीडियो व्यापक रूप से साझा और पसंद किए गए।

6 **अक्टूबर** 2026 – **फेसबुक और धार्मिक ब्लॉग्स :** पितृ पक्ष के दौरान आने वाली इन्दिरा एकादशी व्रत के महात्म्य और कथाओं से जुड़े पोस्ट आध्यात्मिक समूहों में खूब वायरल हुए, जिसमें इस व्रत के जरिए पूर्वजों को मोक्ष मिलने की मान्यता पर चर्चा की गई।

10 **अक्टूबर** 2026 – **प्रमुख समाचार पोर्टल्स** (News) : महालया अमावस्या के अवसर पर काशी, प्रयागराज और गया में लाखों श्रद्धालुओं द्वारा किए गए तर्पण और गंगा आरती की सकारात्मक खबरें व तस्वीरें राष्ट्रीय मीडिया में प्रमुखता से प्रकाशित हुईं।

11 **अक्टूबर** 2026 – (Twitter) : शारदीय नवरात्रि के पहले दिन घटस्थापना और मां शैलपुत्री की पूजा के साथ ही #Navratri2026 और #SanatanDharma जैसे हैशटैग शीर्ष ट्रेंड्स में शामिल रहे, जहां लोगों ने सनातन संस्कृति के प्रति अपना गौरव व्यक्त किया।

12 **अक्टूबर** 2026 – **डिजिटल समाचार** (News) : इस साल नवरात्रि और गरबा के परिधानों में पारंपरिक और आधुनिक फ्यूजन (जैसे एक्सप्रेसिव मिरर–वर्क चनिया चोली और इंडो–वेस्टर्न लुक्स) को लेकर डिजिटल फैशन पोर्टल्स पर Navratri Fashion Trends की विशेष रिपोर्ट्स छाई रहीं।

12 **अक्टूबर** 2026 – **इंस्टाग्राम और यूट्यूब :** नवरात्रि के पारंपरिक उत्सवों, जैसे गुजरात के गरबा और पश्चिम बंगाल की दुर्गा पूजा के भव्य पंडालों के रील्स और लाइव स्ट्रीम्स को करोड़ों व्यूज मिले, जो हिंदू कला और संस्कृति के प्रति युवाओं के बढ़ते आकर्षण को दर्शाते हैं।

14 **अक्टूबर** 2026 – **वैश्विक डिजिटल मीडिया** (Global News) : अमेरिका, यूके और ऑस्ट्रेलिया में रह रहे भारतीय प्रवासियों द्वारा बड़े पैमाने पर आयोजित किए जा रहे नवरात्रि उत्सवों और वहां की स्थानीय सरकारों द्वारा दी जा रही शुभकामनाओं से जुड़ी खबरें सोशल मीडिया पर खूब साझा की गईं, जिसने वैश्विक स्तर पर हिंदू धर्म के बढ़ते सम्मान को रेखांकित किया।

15 **अक्टूबर** 2026 – **इंस्टाग्राम और Twitter** : नवरात्रि के पांचवें दिन मां स्कंदमाता की पूजा के अवसर पर देश के प्रसिद्ध शक्तिपीठों की मनमोहक झांकियां और आरती के क्लिप्स #Navratri टैग के साथ लगातार साझा किए जाते रहे।



हिन्दू केवल भूमि के किसी टुकड़े को तो 'राष्ट' नहीं कहते। एक विचार, एक आचार, एक सभ्यता एवं एक परंपरा से, लोग पुरातन काल से रहते चले आए हैं, उन्हीं लोगों से राष्ट्र बनता है। इस देश को हमारे ही कारण 'हिन्दुस्थान' नाम दिया गया है।

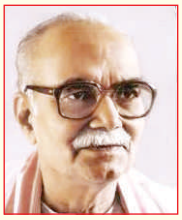
–डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार



यह मेरा राष्ट्र है, मैं इसका अंश मात्र हूँ, इसकी भलाई मेरी भलाई है, मैं मरूँ, चाहे परिवार डूबे, किंतु राष्ट्र जिए, राष्ट्र अच्छा रहे, यह भाव जब उत्पन्न होता है तब राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण होता है। 'मेरे कार्य से भले लाभ न हो, पर कम से कम हानि तो न हो, यह भाव उत्पन्न होने पर चारित्र्य प्रकट होता है।

– श्री गुरुजी

–डेस्क



हिंदू धर्म जो है, वो वास्तव में ऐसा वाइड और विशाल है, मानवतावादी, कि उसके अंदर कहीं कोई संप्रदाय की बात ही नहीं है। कोई संकुचित बात नहीं है। अंग्रेजों के काल में भी हम रामायण और महाभारत पढ़ाते थे यह सबको रास्ता दिखाती है। जो पूजा होती है सुबह, वो तो चाहे पिलानी में देख लीजिए, चाहे रुड़की यूनिवर्सिटी में देख लीजिए। सरस्वती को शिक्षा की देवी माना, और इंडोनेशिया में देखिये शिक्षा की देवी मानकर उनकी पूजा होती है। – रज्जू भैय्या



किसी भी संस्था या संगठन की जो कार्यपद्धति होती है, वह उस संस्था या संगठन के ध्येय और हेतु को सामने रखकर होती है। संघ की भी एक विशेष कार्यपद्धति है। संघ को कुछ करना है, लाना है, उसको दृष्टि में रखकर संघ को एक विशेष प्रकार का स्वयंसेवक निर्माण करना है, जो चरित्रवान् हो, अनुशासित हो। जिसे सामुदायिक दायित्व का बोध हो और सामाजिक जिम्मेदारी का पता हो। ऐसे स्वयंसेवकों का सारे भारत में एक संगठन खड़ा हो, ऐसी संघ कार्यपद्धति हमने खड़ी की है। – बाला साहब देवरस



संस्कृत से हमारा संबंध कमजोर होने के कारण हम अपने प्राचीन ज्ञान–विज्ञान और गौरवशाली इतिहास से दूर होते गए हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में अनेक विषयों का ज्ञान आज भी विद्यमान है। संस्कृत के अध्ययन और संरक्षण के लिए संस्कृत भारती सराहनीय प्रयास कर रही है। महर्षि अरविंद के विचारों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि जिस देश के युवाओं की आँखों में अतीत का गौरव, वर्तमान की पीड़ा और भविष्य के सुनहरे सपने होते हैं, वही देश वास्तव में प्रगति करता है। – कु.सी. सुदर्शन



भारत का सेवा भाव सिखाता है कि जिस व्यक्ति की हम सेवा कर रहे हैं, उसमें भगवान का स्वरूप देखें। जन–जन में जनार्दन का वास मानकर सेवा करना भारतीय संस्कृति की विशेषता है। सेवा केवल किसी की सहायता करना नहीं, बल्कि उसे ईश्वर का रूप मानकर समर्पण भाव से उसकी सेवा करना है। नर में नारायण के दर्शन करके मानवता की सेवा करना ही सच्ची पूजा है।

– डॉ. मोहन भागवत

# विश्व में गूंजता सनातन का स्वर : आस्था, संस्कृति और सभ्यता का विस्तार

संकलनकर्ता – डॉ. राजीव वर्मा, सहायक प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान) मान्यवर कांशीराम राजकीय महाविद्यालय गाजियाबाद



हिंदू धर्म की वैश्विक उपस्थिति आज एक नए दौर में प्रवेश करती दिखाई दे रही है। भारत की भौगोलिक सीमाओं से बाहर मंदिरों का निर्माण, धार्मिक उत्सवों का आयोजन और भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं के प्रति बढ़ती सार्वजनिक रुचि इस व्यापक परिवर्तन की ओर संकेत करती है।

सितंबर 2026 में फ्रांस की राजधानी पेरिस के निकट ब्युसी–सेंट–जॉर्ज में पारंपरिक हिंदू मंदिर का उद्घाटन इस संदर्भ में विशेष महत्त्व रखता है। यह आयोजन केवल एक धार्मिक स्थल की स्थापना नहीं, बल्कि यूरोप में हिंदू समुदाय की सांस्कृतिक पहचान और संस्थागत उपस्थिति का भी प्रतीक है। इस अवसर से जुड़े सांस्कृतिक कार्यक्रमों और सार्वजनिक आयोजनों ने हिंदू परंपराओं को व्यापक समाज के सामने प्रस्तुत करने का अवसर दिया। पारंपरिक स्थापत्य, पूजा–पद्धति और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से मंदिर भारतीय सभ्यता की उन परंपराओं को जीवंत रखते हैं, जो पीढ़ियों से ज्ञान, आस्था और सामाजिक जीवन को जोड़ती आई हैं। प्रवासी भारतीयों के लिए ऐसे मंदिर अपनी जड़ों से जुड़े रहने के केंद्र हैं, वहीं स्थानीय समाज के लिए वे भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता को समझने का माध्यम बन सकते हैं।

ब्रिटेन में लंदन स्थित प्रसिद्ध नेस्डेन मंदिर और उससे जुड़े आध्यात्मिक आयोजन भी हिंदू धर्म की अंतरराष्ट्रीय उपस्थिति को रेखांकित करते हैं। नियमित धार्मिक गतिविधियाँ, सामूहिक प्रार्थनाएँ और आध्यात्मिक संवाद यह दर्शाते हैं कि हिंदू परंपराएँ विदेशों में केवल व्यक्तिगत आस्था तक सीमित नहीं हैं, बल्कि संगठित सामुदायिक जीवन का हिस्सा भी हैं। हिंदू धर्म की वैश्विक उपस्थिति को केवल मंदिरों की संख्या से नहीं समझा जा सकता। योग, ध्यान, आयुर्वेद, भगवद्गीता के दर्शन और भारतीय आध्यात्मिक चिंतन ने भी विश्व के विभिन्न समाजों में रुचि उत्पन्न की है। इन परंपराओं की विशेषता उनके विविध दार्शनिक दृष्टिकोणों, जीवन के प्रति व्यापक दृष्टिकोण और आत्मचिंतन की समृद्ध परंपरा में निहित है।

मंदिरों की स्थापना, सांस्कृतिक आयोजनों और प्रवासी समुदायों की सक्रियता से यह स्पष्ट होता है कि हिंदू धर्म अनेक देशों में अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक उपस्थिति को सुदृढ़ कर रहा है। आज की वैश्वीकृत दुनिया में सनातन परंपरा की यह यात्रा एक महत्त्वपूर्ण प्रतिमान सामने रखती है कि क्या भारतीय सभ्यता की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां राष्ट्रीय सीमाओं से परे एक व्यापक संवाद का आधार बन सकती हैं? पेरिस से लंदन तक दिखाई देने वाली गतिविधियां संकेत देती हैं कि हिंदू धर्म की वैश्विक यात्रा केवल अतीत की विरासत को सुरक्षित रखने की कहानी नहीं, बल्कि वर्तमान में अपनी पहचान व्यक्त करने और विभिन्न संस्कृतियों के साथ संवाद स्थापित करने की प्रक्रिया भी है।



# महिला सुरक्षा पर सुप्रीम कोर्ट का स्वत: संज्ञान
# सख्त कानूनों के बावजूद असुरक्षित महिलाएँ

संकलनकर्ता – डॉ. आभा सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

महिलाओं की सुरक्षा केवल कठोर कानून बनाने से नहीं, बल्कि उन्हें जमीन पर प्रभावी रूप से लागू करने और प्रशासन की जवाबदेही तय करने से सुनिश्चित होगी। किसी भी समाज की तरक्की इस बात से आँकी जा सकती है कि वहाँ महिलाएँ कितनी सुरक्षित और स्वतंत्र हैं। यदि किसी महिला को नौकरी से घर लौटते समय या सार्वजनिक परिवहन के साधनों का इस्तेमाल करते समय अपनी सुरक्षा की चिंता करनी पड़े, तो यह पूरे समाज के लिए गंभीर सवाल है। महिलाओं की सुरक्षा केवल पुलिस या प्रशासन की जिम्मेदारी का मुद्दा नहीं, बल्कि नागरिक के रूप में महिलाओं को मिलने वाले अधिकारों और सम्मान से भी जुड़ा मुद्दा है। दिल्ली–एनसीआर में महिलाओं और बच्चियों के विरुद्ध अपराधों को लेकर सुप्रीम कोर्ट की चिंता ने एक बार फिर सवाल उठा दिया है कि आखिर महिलाएँ सार्वजनिक स्थानों पर खुद को सुरक्षित क्यों महसूस नहीं कर पाती हैं। अदालत का मुख्य सवाल था कि जब सुरक्षा के लिए पहले से कानून, योजनाएँ और पुलिस व्यवस्था मौजूद हैं, तो फिर ऐसी घटनाओं को रोकने में कमियाँ क्यों बनी हुई हैं।

28 सितंबर 2026 को सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली–एनसीआर में दुष्कर्म की घटनाओं से जुड़े मामलों का स्वतः संज्ञान लिया। अदालत के सामने दिल्ली के आस्था कुंज पार्क में हुई घटना, स्वरूप नगर में दुष्कर्म और हत्या तथा ग्रेटर नोएडा से दिल्ली तक चलती स्लीपर बस में नाबालिग के कथित उत्पीड़न जैसी घटनाओं की खबरें थीं। आस्था कुंज पार्क के आसपास स्थित लेडी श्रीराम कॉलेज की छात्राओं द्वारा पहले भी उत्पीड़न की शिकायतें किए जाने की बात सामने आई थी। अदालत ने इन घटनाओं को अलग–अलग अपराधों के रूप में देखने के बजाय सार्वजनिक सुरक्षा और प्रशासनिक व्यवस्था की कमियों के संदर्भ में जाँचने का निर्णय लिया। न्यायालय के सामने सार्वजनिक स्थानों पर पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था न होना, सीसीटीवी कैमरों की निगरानी और पुलिस गश्त जैसे मुद्दे महत्वपूर्ण रहे। इस मामले ने स्पष्ट किया कि अपराध होने के बाद कार्रवाई करना जरूरी है, लेकिन उससे भी ज्यादा जरूरी ऐसी व्यवस्था बनाना है, जिससे अपराध की आशंका को कम किया जा सके। न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति



के. विनोद चंद्रन की पीठ ने कहा कि संविधान के अनुच्छेद 21 के अंतर्गत जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार में हिंसा के भय से मुक्त होकर सम्मानपूर्वक जीने का अधिकार भी शामिल है। इसका अर्थ केवल जीवित रहना नहीं, बल्कि गरिमा, सम्मान और सुरक्षा के साथ जीवन जीना है। यदि कोई महिला असुरक्षा के कारण नौकरी करने, पढ़ाई करने या अपनी रोजमर्रा की गतिविधियों को सीमित करने के लिए मजबूर होती है, तो उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता भी प्रभावित होती है। इसलिए महिला सुरक्षा केवल कानून–व्यवस्था का प्रश्न नहीं, बल्कि समानता, स्वतंत्रता और गरिमा से जुड़ा संवैधानिक प्रश्न भी है।

महिलाओं की सुरक्षा के लिए कठोर कानूनों के साथ–साथ संवेदनशील प्रशासन, जिम्मेदार पुलिस व्यवस्था और जागरूक समाज की भी जरूरत है। कानून के अनुसार अपराध रोकना और दोषियों को दंड दिलाना ही न्यायपूर्ण व्यवस्था की सही पहचान है। किसी शहर की पहचान केवल उसकी ऊँची इमारतों और विकास योजनाओं से नहीं, बल्कि इस बात से भी होती है कि वहाँ रहने वाली महिलाएँ खुद को कितना सुरक्षित महसूस करती हैं। महिलाओं को सच्चा न्याय तभी मिलेगा, जब उन्हें सुरक्षा माँगने के बजाय अपने संवैधानिक अधिकारों के साथ निर्भीक होकर जीने का अवसर मिलेगा।

संकलनकर्ता – नन्द किशोर शर्मा, पूर्व प्रवक्ता, दिल्ली शिक्षा विभाग

# विजयदशमी त्यौहार साहस और विजय का पर्व : मोदी



नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को विजयदशमी के अवसर पर कहा कि समाज में विभाजन पैदा करने वाले लोग और हमारी संस्कृति से घृणा करने वाली मानसिकता राष्ट्र के दुश्मन है। उन्होंने राष्ट्र हित में देश की सभी संस्थाओं और राजनीतिक दलों से एकजुट होकर काम करने का आवाहन किया। प्रधानमंत्री ने यह उद्बोधन आई पी एक्सटेंशन स्थित उत्सव ग्राउंड में विजयदशमी उत्सव के अवसर पर दिया ।उन्होंने कहा कि राष्ट्रहित सर्वोपरि होना चाहिए और देश को बांटने वाली मानसिकता के खिलाफ सभी को मिलकर खड़ा होना होगा। प्रधानमंत्री ने 'मंत्र समानों मंत्रः समितिः समानी' का उल्लेख करते हुए कहा कि देश के विचार और प्रयास राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए एक दिशा में होने चाहिए। मोदी ने विजयदशमी को साहस और विजय का पर्व बताते हुए कहा कि जब देश सत्य और मानवता के साथ खड़ा होता है तो अंततः जीत होती है। उन्होंने कहा कि आज भारत का कोना–कोना राममय है। गांव–गांव और शहर–शहर रामलीलाओं के मंचन से प्रभु श्री राम के आदर्श जीवंत हो रहे हैं।

# भर्तियों में भ्रष्टाचार कतई बर्दाश्त नहीं : योगी



गाजियाबाद : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को कहा कि अपराध और भ्रष्टाचार को लेकर सरकार की नीति जीरो टॉलरेंस की है। जो कोई भी युवाओं की नौकरी से खिलवाड़ करेगा वह जेल जाएगा। उनके बाप–दादाओ की संपत्ति भी जप्त कर ली जाएगी। मुख्यमंत्री शुक्रवार को गाजियाबाद के सुंदरदीप विश्वविद्यालय में आयोजित मेरठ सहारनपुर खंड के स्नातक और शिक्षक मतदाता सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने दावा किया कि पिछले 9 वर्षों में 9.5 लाख युवाओं को सरकारी नौकरी दी गई। हाल ही में यूपी पुलिस के 32600 से अधिक अभ्यर्थियों के परिणाम जारी हुए हैं, इसके अलावा 42000 से अधिक होमगार्ड की भर्ती के परिणाम आ चुके हैं। उन्होंने बताया कि शिक्षकों की भर्ती प्रक्रिया अंतिम चरण में है।

सपा शासन से तुलना करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि 2017 में भाजपा जब सत्ता में आई तब 120 स्टार्टअप थे। अब उनकी संख्या 24000 से अधिक है, इससे लाखों युवाओं के लिए रोजगार के साधन मिले हैं।

# नवरात्रि और दुर्गा पूजा के अवसर पर नारी शक्ति के संदेश से सजे पंडाल



नोएडा / ग्रेटर नोएडा : नवरात्रि और दुर्गा पूजा के अवसर पर नोएडा और ग्रेटर नोएडा में धार्मिक आयोजनों के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम रही। कहीं नारी शक्ति की थीम पर दुर्गा पूजा पंडाल सजाए गए तो कहीं शंख ध्वनि प्रतियोगिता, धनुची नृत्य और डांडिया नाइट में लोगों ने उत्साह से भाग लिया। मंदिरों में मां महागौरी की पूजा अर्चना, हवन और भजन संध्या आयोजित हुई । वहीं ग्रेटर नोएडा के दुजाना गांव स्थित दादी सत्ती मंदिर में 24वां विशाल जागरण में श्रद्धालु भजनों पर झूमे। सेक्टर 50 की सप्तर्षि संघ समिति द्वारा 22 वां शरदोत्सव नारी शक्ति की थीम पर आयोजित किया गया। महिला सदस्यों ने मातृ मंदिर की थीम पर पंडाल सजाकर महिलाओं की शक्ति, ममता और समाज में उनकी भूमिका को दर्शाया।

सेक्टर–62 की सर्बोजनिन दुर्गा पूजा समिति ने चित्र प्रतियोगिता के साथ कार्यक्रम शुरू किया। इसके बाद शंख बजाने और उलु ध्वनि प्रतियोगिता आयोजित हुई। शाम को आरती के बाद धनुची नृत्य का मन मोहक आयोजन हुआ। विभिन्न पंडालों में श्रद्धालुओं के लिए भोजन और प्रसाद की व्यवस्था भी की गई।

# प्रगति पथ पर अग्रसर : नए युग का नया कश्मीर

संकलनकर्ता– डॉ. अनुज, सहायक प्राध्यापक (अतिथि) दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म, दिल्ली विश्वविद्यालय



कश्मीर अपनी प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और पर्यटन के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। आज यह क्षेत्र विकास की नई संभावनाओं के साथ आगे बढ़ रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में युवाओं की बढ़ती भागीदारी, पर्यटन का विस्तार और रोजगार के नए अवसर कश्मीर में बदलाव की नई तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। आज का कश्मीर केवल अपनी चुनौतियों के लिए ही नहीं, बल्कि विकास, शिक्षा और प्रगति की आकांक्षाओं के लिए भी चर्चा में है। सीमा पार से होने वाली आतंकवादी गतिविधियों पर नियंत्रण, सीमावर्ती क्षेत्रों की सुरक्षा और शांति बनाए रखना सरकार तथा सुरक्षा बलों की प्राथमिकताओं में शामिल है। चुनौतियों के बावजूद कश्मीर में स्थिरता और विकास की उम्मीदें मजबूत हुई हैं। नए युग का कश्मीर शिक्षा, सुरक्षा और समृद्धि के बीच संतुलन स्थापित करते हुए आगे बढ़ने की आकांक्षा रखता है। इसकी प्रगति भारत की विकास यात्रा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

सितंबर 2026 में दक्षिण कश्मीर के शोपियां–कुलगाम सीमा के निकट स्थित एक बगीचे से इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (IED) बरामद किया गया। सूचना मिलने के बाद सुरक्षा बलों ने मौके पर पहुँचकर विस्फोटक उपकरण को निष्क्रिय कर दिया। इससे पहले, इसी क्षेत्र में सुरक्षा बलों ने लश्कर–ए–तैयबा से जुड़े तीन सहयोगियों को गिरफ्तार किया था। विस्फोटक की बरामदगी और गिरफ्तारियों के बीच किसी संबंध की आधिकारिक पुष्टि उपलब्ध जानकारी में नहीं है। सितंबर 2026 में भारत के विदेश मंत्रालय ने पाकिस्तान और चीन के बीच गठित तथाकथित सीमा संयुक्त आयोग को मान्यता देने से इनकार किया। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि इस मुद्दे पर भारत का रुख स्पष्ट और लगातार एक जैसा रहा है। उन्होंने दोहराया कि भारत पाकिस्तान और चीन के बीच सीमा संबंधी सहयोग को स्वीकार नहीं करता। साथ ही, उन्होंने कहा कि भारतीय क्षेत्रों से जुड़े ऐसे किसी भी समझौते या व्यवस्था का भारत की संप्रभुता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। सितंबर 2026 तक उपलब्ध जानकारी के अनुसार, जम्मू–कश्मीर की सीमा पर ड्रोन घुसपैठ की घटनाएँ सुरक्षा के लिहाज से चिंता का विषय बनी हुई हैं। गृह मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय सीमा के आसपास ड्रोन के इस्तेमाल के प्रयासों में वृद्धि देखी जा रही है। इनका उपयोग निगरानी के अलावा हथियारों, गोला–बारूद और मादक पदार्थों की तस्करी के लिए भी किया जा रहा है। इन चुनौतियों को देखते हुए भारतीय सेना और केंद्र सरकार सीमा पर निगरानी बढ़ाने तथा सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने पर ध्यान दे रहे हैं। अक्तूबर 2026 में जम्मू–कश्मीर के राजौरी जिले के नौशहरा सेक्टर स्थित लाम क्षेत्र के पास नियंत्रण रेखा (एलओसी) के निकट भारतीय सेना ने पाकिस्तान अधिकृत जम्मू–कश्मीर (पीओजेके) की एक महिला को हिरासत में लिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार, सेना के गश्ती दल ने महिला को क्षेत्र में देखा और रोककर प्रारंभिक पूछताछ की। इसके बाद उसे आगे की जाँच के लिए पुलिस को सौंप दिया गया। पुलिस के समक्ष महिला ने कथित तौर पर कहा कि वह अनजाने में नियंत्रण रेखा पार कर भारतीय क्षेत्र में आ गई थी। मामले से जुड़े तथ्यों और अन्य सुरक्षा पहलुओं की जाँच की जा रही है। राजौरी जिले के नौशहरा और आसपास के सीमावर्ती क्षेत्रों में नियंत्रण रेखा पर नियमित निगरानी और गश्त की जाती है। महिला को हिरासत में लिए जाने की घटना इसी क्षेत्र में हुई।



–डेस्क

# यूपी में 4.60 लाख से अधिक विद्यार्थियों को मिलेगी छात्रवृत्ति, ₹148 करोड़ से ज्यादा की धनराशि होगी ट्रांसफर

आर्थिक अभाव किसी विद्यार्थी की शिक्षा और उसके सपनों की राह में बाधा न बने, यह डबल इंजन सरकार का संकल्प है। इसी संकल्प को आगे बढ़ाते हुए, आज अल्प आय वर्ग के पूर्वदशम (कक्षा 9–10) एवं दशमोत्तर कक्षाओं के 4.60 लाख से अधिक छात्र–छात्राओं के बैंक खातों में ₹148 करोड़ से अधिक की छात्रवृत्ति/शुल्क प्रतिपूर्ति की धनराशि का अंतरण होगा। यह आर्थिक सहायता शिक्षा को संबल, प्रतिभा को अवसर और युवा सपनों को नई उड़ान प्रदान करेगी।



छात्रवृत्ति सरकार की वह आर्थिक मदद है, जो पढ़ाई कर रहे विद्यार्थियों को दी जाती है, ताकि फीस और पढ़ाई का खर्च उनके परिवार पर भारी न पड़े। वहीं शुल्क प्रतिपूर्ति का मतलब है कि विद्यार्थी जो फीस पहले भर चुका होता है, उसकी रकम सरकार बाद में वापस कर देती है। यह पूरी राशि सीधे विद्यार्थियों के बैंक खाते में भेजी जाती है। यह लाभ अलग–अलग वर्गों के विद्यार्थियों को मिलेगा। पिछड़ा वर्ग के 2,23,615 विद्यार्थियों को 60.01 करोड़ रुपये की छात्रवृत्ति दी जाएगी। अनुसूचित जाति के 1,59,959 विद्यार्थियों को 64.54 करोड़ रुपये मिलेंगे। सामान्य वर्ग के 38,084 विद्यार्थियों को 11.43 करोड़ रुपये की छात्रवृत्ति दी जाएगी, जबकि अल्पसंख्यक वर्ग के 38,901 विद्यार्थियों को 12.06 करोड़ रुपये का लाभ मिलेगा। इन सभी राशियों को जोड़ें तो कुल आंकड़ा 148 करोड़ रुपये से अधिक बैठता है, और लाभ पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या 4.60 लाख से ऊपर पहुंच जाती है।

सरकार का दावा : ऑटोमेशन से बढ़ी पारदर्शिता – छात्रवृत्ति बांटने की पूरी प्रणाली अब ऑटोमेशन के जरिए संचालित की जा रही है। इसका मतलब है कि ज्यादातर काम कंप्यूटर प्रणाली के जरिए अपने आप हो जाता है, जिससे बीच में किसी तरह की गड़बड़ी या देरी की गुंजाइश काफी हद तक कम हो जाती है। सरकार के मुताबिक, इसी वजह से वितरण प्रक्रिया में पारदर्शिता बढ़ी है और विद्यार्थियों को समय पर छात्रवृत्ति उपलब्ध कराने की व्यवस्था भी पहले से मजबूत हुई है। सरकार का मुख्य जोर इस बात पर है कि विद्यार्थियों तक उनकी रकम बिना किसी रुकावट के और साफ–सुथरे तरीके से पहुंचे।

# यूपी पुलिस में 470 खिलाड़ियों को मिली नौकरी, योगी ने सौंपे नियुक्ति पत्र



उत्तर प्रदेश में खेल प्रतिभाओं को पुलिस विभाग में सेवा का अवसर दिया गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 8 अक्टूबर को लोक भवन सभागार में आयोजित कार्यक्रम में 470 खिलाड़ियों को नियुक्ति पत्र सौंपे। इनमें 43 उपनिरीक्षक नागरिक पुलिस, 295 आरक्षी नागरिक पुलिस और 132 आरक्षी पीएसी के पदों पर नियुक्त हुए हैं। ये खिलाड़ी अब पुलिस विभाग में अपनी जिम्मेदारियां निभाने के साथ खेलों में भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन जारी रख सकेंगे। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पदक विजेता शामिल नियुक्ति पाने वाले खिलाड़ियों में कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक जीत चुके खिलाड़ी शामिल हैं। कुशीनगर की बॉक्सर आइस प्रजापति ने नेशनल गेम्स 2024 में स्वर्ण पदक जीता था। मेरठ के निशानेबाज शार्दुल विहान एशियन गेम्स 2018 के रजत पदक विजेता हैं। हॉकी खिलाड़ी आमिर अली और निशानेबाज मोहित पाल भी अपनी खेल उपलब्धियों के लिए पहचाने जाते हैं। इनके अलावा बैडमिंटन, कराटे, बॉक्सिंग, तीरंदाजी, एथलेटिक्स, वॉलीबॉल, भारोत्तोलन, साइक्लिंग और कबड्डी जैसे खेलों के खिलाड़ियों को भी नियुक्ति मिली है।

सरकार के अनुसार, कुशल खिलाड़ी योजना के तहत वर्ष 2022 से अब तक 950 खिलाड़ियों को पुलिस विभाग में नौकरी दी जा चुकी है। उत्तर प्रदेश पुलिस स्पोर्ट्स कंट्रोल बोर्ड के माध्यम से खिलाड़ियों को आधुनिक खेल सुविधाएं उपलब्ध कराने पर भी जोर दिया जा रहा है, ताकि वे विभागीय जिम्मेदारियों के साथ खेल प्रतियोगिताओं में हिस्सा ले सकें। सरकार द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक, सितंबर से अक्टूबर तक आयोजित पांच नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रमों में कुल 7,142 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र दिए गए। इनमें विभिन्न विभागों के चयनित अभ्यर्थी, पुलिसकर्मी, शिक्षक, प्रधानाचार्य, ग्राम पंचायत अधिकारी और खिलाड़ी शामिल हैं। यह पहल युवाओं को सरकारी सेवाओं में अवसर उपलब्ध कराने और खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से संचालित की जा रही है।

–डेस्क

# उत्तर प्रदेश में घर वापसी की गूंज : पूर्वजों की ओर लौटे लोग

**उत्तर प्रदेश और आसपास के क्षेत्रों में सनातन धर्म अपनाने और घर वापसी से जुड़े कई समाचार सामने आए हैं। इन घटनाओं में शामिल लोगों ने अपनी आस्था, धार्मिक पहचान और पूर्वजों की परंपराओं को अपने निर्णय का आधार बताया है। उनके अनुसार, सनातन धर्म की विचारधारा और परंपराओं से जुड़ना उनके व्यक्तिगत विश्वास का विषय है।**



गाजियाबाद : लोनी स्थित सनातन भवन में अलाउद्दीन नामक युवक ने सनातन धर्म अपनाकर अपना नाम अखिलेश रखा। हिंदू रक्षा दल के पदाधिकारी अमित प्रजापति के अनुसार, वैदिक मंत्रोच्चार, हवन–पूजन और शुद्धीकरण के बाद धार्मिक अनुष्ठान संपन्न हुआ। अखिलेश ने बताया कि सनातन धर्म की विचारधारा को समझने के बाद उन्होंने अपनी इच्छा से यह निर्णय लिया।

गाजीपुर : दिलदारनगर क्षेत्र के उसिया गांव में कुछ मुस्लिम परिवारों में पीढ़ियों पुरानी हिंदू विवाह परंपराएं प्रचलित होने का दावा किया जाता है। स्थानीय लोगों के अनुसार, उनके पूर्वजों ने लगभग 350 वर्ष पहले इस्लाम अपनाया था, लेकिन हल्दी, ढोलक, लाल जोड़ा और पारिवारिक रस्मों जैसी परंपराएं आज भी कायम हैं।

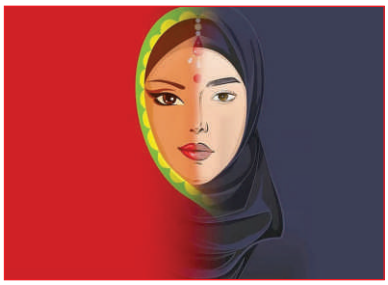
हरिद्वार : रिपोर्ट के अनुसार, पीलीभीत निवासी माहिद अपनी पत्नी सबीना और तीन बच्चों के साथ चंडी घाट पहुंचे। गंगा पूजन और हवन के बाद परिवार ने सनातन धर्म अपनाने की घोषणा की। माहिद का नाम मोहित और सबीना का नाम खुशी रखा गया।

बरेली : रामपुर निवासी मेहताब ने सनातन धर्म अपनाकर अपना नाम ममता रखा और मुरादाबाद निवासी जागेशपुरी से हिंदू रीति–रिवाजों के अनुसार विवाह किया।

फिरोजाबाद : 19 वर्षीय फैसल खान ने आर्य समाज मंदिर में धार्मिक प्रक्रिया पूरी करने के बाद अपना नाम ईशान जाट रखने की बात कही। उसने बचपन से हिंदू धर्म, देवी–देवताओं और पूजा–पाठ में रुचि होने की जानकारी दी।

इन घटनाओं में संबंधित लोगों ने अपने निर्णयों को आस्था और धार्मिक पहचान से जोड़कर घर वापसी केवल नाम बदलने का विषय नहीं, बल्कि पूर्वजों की परंपराओं, मान्यताओं और सनातन संस्कृति से दोबारा जुड़ने की भावना भी है।

# मतांतरण और महिलाओं के शोषण से जुड़े कई मामले चर्चा में रहे



उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के विभिन्न जिलों से पहचान छिपाकर दोस्ती करने, मतांतरण के लिए दबाव बनाने, यौन शोषण और अपहरण के आरोपों से जुड़े कई मामले सामने आए हैं। हरिद्वार, उधमसिंह नगर, सहारनपुर, मथुरा, आगरा, मेरठ, पीलीभीत, मुजफ्फरनगर, एटा, मिर्जापुर, चम्पावत और गाजियाबाद सहित कई स्थानों में घटनाएं हुई।

उधमसिंह नगर और सहारनपुर में पहचान छिपाकर नाबालिग या किशोरी से दोस्ती करने, शोषण और मतांतरण का दबाव बनाया गया था। मथुरा में हिंदू युवती को बहलाकर ले जाने और मतांतरण कर निकाह करने के आरोप में मुकदमा दर्ज किया गया है, पुलिस ने फरार आरोपी मुश्ताक को मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार करने की जानकारी दी है। आगरा और मिर्जापुर में भी कथित अवैध धर्मांतरण के मामलों में गिरफ्तारियां हुईं। पीलीभीत में युवती के कथित जबरन मतांतरण और अपहरण के मामले में पुलिस ने कार्रवाई की है। मुजफ्फरनगर, हल्द्वानी, खटीमा और अन्य स्थानों से भी ऐसे ही मतांतरण की समाचार सामने आये हैं शहर बदलता है नाम बदलता है पर घटना वही हिन्दू बहन बेटी के साथ नाम बदला कर मतांतरण कर मानसिक और शारीरिक प्रताड़ना देते है कट्टरपंती सोच के लोग। जिहाद की इन घटनाओं के बीच यह स्पष्ट करना जरूरी है कि सभी मामलों में आरोपों की पहचान मुस्लिमों ने अपने नाम पहचान छिपाकर लोभ लालच जोर धमकाकर उनके साथ गलत किया है।

हमें शिक्षा और जागरूकता की शुरुआत अपने घर से करनी होगी। महिलाओं और नाबालिगों की सुरक्षा के लिए बच्चों को अच्छे संस्कार, सही–गलत की पहचान और कानून की जानकारी देना जरूरी है। किसी भी कट्टरपंथी और अपराधी सोच का विरोध करते हुए जागरूकता बढ़ानी होगी।

# जय क्षेत्रों में नेतृत्व कर रही हैं आज की नारी

**गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा में प्रेरणा विमर्श 2026 का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की थीम 'उत्कर्ष - नारी सम्मान और युवा स्वाभिमान' थी। कार्यक्रम में सृजन संवाद के अंतर्गत 'स्वाभिमानी नारी, सशक्त भारत और युवा सोच, नया भारत विषयों पर लेखक, पत्रकार और प्रबुद्ध विचारकों ने समानांतर चले दो सत्रों में वैचारिक मंथन किया।**



सत्र चर्चा में स्वाभिमानी नारी, सशक्त भारत विषययक सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख नरेंद्र ठाकुर ने कहा कि परिवार समाज को जोड़ता है। भारतीय संस्कार और परम्पराएं परिवार को जोड़ने का काम करती हैं। नई पीढ़ी तक संस्कारों को ले जाने का कार्य परिवार की महिला की अधिक है। घर की दादी, नानी और चाची इन संस्कारों को आगे बढ़ाती हैं। पुरुषों को महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। दरअसल, परिवार जैसा होगा वैसा समाज बनेगा और वैसा ही राष्ट्र होगा।

इस दौरान प्रसिद्ध योग विशेषज्ञ निवेदिता जोशी ने कहा कि महिलाओं की जिम्मेदारी उनके अधिकारों से तय नहीं होनी चाहिए। महिलाएं ही खाना बनाएंगी, बच्चे पालेंगी; इस सोच को बदलने से ही समाज में बदलाव आएगा। स्वाभाविक रूप से ये बदलाव दिख भी रहा है। शारीरिक शक्ति तभी मिलेगी जब मानसिक शक्ति बेहतर होगी।

चर्चा को आगे बढ़ाते हुए निदेशक, भविष्य प्रौद्योगिकी प्रबंधन निदेशालय रंजना मल्लामल्ली ने कहा कि जब तक परिवार साथ नहीं होता तब तक आप अपना सौ फीसदी नहीं दे सकते। परिवार के साथ सामंजस्य बनाना जरूरी है। महिलाएं स्वास्थ्य का भी ध्यान रखें। आज महिलाएं जय क्षेत्रों में नेतृत्व कर रहीं हैं। तकनीक विशेषज्ञ से लेकर एंटरप्रेन्योर तक है। कहा जाय तो आज का वक्त आधी आबादी के लिए स्वर्ण काल है। आज हर क्षेत्र में नारी की बादशाहत है। अगर कठिन लक्ष्य रखेंगे तो सभी साथ देते हैं।

संसद टीवी एंकर दीक्षा कोहली ने सत्र का संचालन करते हुए कहा कि नई मंत्र एक शब्द नहीं बल्कि उपासना है नई विश्व निर्मात्री है और प्रथम गुरु माँ ही होती है। सत्र के अंत में प्रतिभागियों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए मंचाशीन अतिथियों ने उनकी जिज्ञाशाओं का समाधान किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रियंका सिंह और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रदीप कुमार ने किया।



# नवाचार से युवा गढ़ रहे नया भारत



युवा सोच, नया भारत विषय पर आयोजित समानांतर सत्र में युवा राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति हैं। क्या वे सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं? क्या उनमें समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध है? AI के दौर में सकारात्मक सोच और नवाचार के साथ युवाओं को राष्ट्र निर्माण का सशक्त भागीदार कैसे बनाया जाए, इन्हीं महत्वपूर्ण विषयों पर विशिष्ट वक्ताओं के साथ आईएमएस गाजियाबाद के प्रो. (डॉ.) अनिल निगम ने सत्र का संचालन करते हुए कहा, आज युवा को फैक्ट और डाटा चैक कर ही सूचनाओं को आगे बढ़ाना चाहिए।

युवा सोच, नया भारत विषयक सत्र में चर्चा करते हुए आईएमटी ग्रुप ऑफ कॉलेज के प्रबंध निदेशक डॉ. मयंक अग्रवाल ने कहा कि युवाओं को वक्त से तालमेल बिठाने के लिए ज्यादा तेज दौड़ना होगा। सीखने की कोई उम्र नहीं होती है, इसलिए समाज में मौजूद ऐसी शख्सियतों से सीखने की जरूरत है, उन्हें प्रेरणास्रोत बनाने की आवश्यकता है।

जबकि एनडीटीवी की एंकर रंजना राठौर ने कहा कि युवाओं को समाज में हो रहे बदलावों पर नजर रखने की जरूरत है। सोशल मीडिया में प्रतिस्पर्धा से दबाव में नहीं आना चाहिए। डिजिटल जागरूकता जरूरी है। सफल व्यक्ति अचीव करता है। जबकि समझदार व्यक्ति पढ़ा लिखा व्यक्ति होता है।

चर्चा में टाइम्स नाउ नवभारत एंकर साक्षी मिश्र ने भाषा की महत्ता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मेहनत का कोई विकल्प नहीं है, इसलिए युवाओं को खूब पढ़ने और लिखने की जरूरत है। अपने अनुभव का जिक्र करते हुए उन्होंने भाषा को सीखने की अपनी जिजीविषा भी बताई।

इस सत्र का मंच संचालन डॉ. नीलम कुमारी ने किया और धन्यवाद ज्ञापन प्रो. हरेंद्र सिंह ने किया। वैशाली मित्तल ने युवाओं और नारी शक्ति पर स्वरचित कविता प्रस्तुति की। जबकि वंशिका सेठी ने समापन पर वंदे मातरम का गान किया। सत्र के अंत में प्रतिभागियों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए मंचाशीन अतिथियों ने उनकी जिज्ञाशाओं का समाधान किया।



संकलनकर्ता – डॉ. दीपा रानी (सहायक प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय)

# प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में राष्ट्र विकास को नई दिशा



भारत आज आर्थिक विकास, तकनीकी प्रगति और आत्मनिर्भरता की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है। वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं के बीच देश की उत्पादन क्षमता, निर्यात और डिजिटल अर्थव्यवस्था में हो रही प्रगति भारत की बढ़ती संभावनाओं को दर्शाती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने दिल्ली विश्वविद्यालय के श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स के शताब्दी समारोह में भारत की उपलब्धियों और भविष्य के लक्ष्यों का उल्लेख करते हुए विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में प्रत्येक नागरिक की भागीदारी को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों ने शिक्षा, नेतृत्व और राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन संस्थानों से निकले विद्यार्थियों ने राजनीति, न्यायपालिका, अर्थव्यवस्था और उद्योग सहित विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई है। शिक्षा और कौशल विकास की यही शक्ति वर्ष 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को साकार करने में अहम भूमिका निभायेगी। आर्थिक विकास की दृष्टि से मेक इन इंडिया जैसी पहलें, घरेलू विनिर्माण को प्रोत्साहित करने, रोजगार के अवसर बढ़ाने और आयात पर निर्भरता कम करने की दिशा में महत्वपूर्ण हैं। डिजिटल क्रांति और तकनीकी नवाचार ने आम नागरिकों के जीवन में भी बदलाव लाया है। डिजिटल सेवाओं के विस्तार से बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य और सरकारी सुविधाओं तक पहुंच आसान हुई है। अंतरिक्ष अनुसंधान, स्टार्टअप संस्कृति और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे उभरते क्षेत्रों में भारत की संभावनाएं देश को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में नई पहचान दिला रही हैं।स्मार्टफोन उत्पादन, रक्षा क्षेत्र में स्वदेशी निर्माण और निर्यात में वृद्धि भारत की औद्योगिक क्षमता को मजबूत करने के प्रयासों को रेखांकित करती है।

– निक्की वर्मा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

# कैप्टन स्मित मच्छार का अदम्य साहस भारतीय देशवासियों के लिए प्रेरणा-

भारत हमेशा से ही वीरों और साहसी व्यक्तियों की धरती रहा है। हमारे देश के लोग अपनी बहादुरी, कर्तव्यनिष्ठा और मानवता से पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन करते हैं। भारतीय पायलट कैप्टन स्मित मच्छार इसका एक प्रेरणादायक उदाहरण हैं। उनकी बहादुरी ने अनेक यात्रियों की जान बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 30 सितंबर 2026 को दुबई से इजराइल के तेल अवीव जा रही फ्लाईदुबई की उड़ान में एक गंभीर घटना हुई। उड़ान के दौरान सह–पायलट ने कैप्टन स्मित मच्छार पर हमला कर दिया और विमान की सुरक्षा को खतरा पैदा हो गया। ऐसी कठिन परिस्थिति में भी कैप्टन स्मित ने साहस और सूझबूझ का परिचय दिया। घायल होने के बावजूद उन्होंने कॉकपिट का दरवाजा खोलने में मदद की, जिससे यात्रियों और चालक दल के सदस्यों को हस्तक्षेप करने का अवसर मिला। अंततः विमान को सुरक्षित उतारने में सफलता मिली। इस घटना में लगभग 174 यात्रियों की जान बचाने की खबर सामने आई। कैप्टन स्मित मच्छार की बहादुरी



यह सिखाती है कि सच्चा साहस कठिन समय में अपने कर्तव्य का पालन करना है। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत परेशानी से ऊपर उठकर यात्रियों की सुरक्षा को प्राथमिकता दी। उनका यह कार्य न केवल विमानन क्षेत्र के लिए, बल्कि पूरी मानवता के लिए प्रेरणादायक है।उनकी वीरता की प्रशंसा भारत सहित दुनिया के कई देशों में हुई। उनकी कहानी प्रत्येक भारतीय को गर्व का अनुभव कराती है। यह घटना बताती है कि भारतीय प्रतिभा, साहस और ज़िम्मेदारी की भावना विश्व स्तर पर सम्मान प्राप्त कर सकती है। कैप्टन स्मित मच्छार की बहादुरी भारत के लिए गर्व का विषय है। उनका साहस हमें मानवता, कर्तव्यनिष्ठा और विपरीत परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

– संदीप, दिल्ली विश्वविद्यालय

# युवा संवाद कार्यक्रम

**डॉ. मोहन भागवत जी ने युवाओं और संघ को लेकर कही ये खास बातें :** राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने भोपाल में युवा संवाद कार्यक्रम में युवाओं की भूमिका और संघ की 100 वर्षों की यात्रा पर महत्वपूर्ण विचार रखे। उन्होंने कहा कि युवाओं की भूमिका के बिना कोई काम 100 वर्षों तक चल ही नहीं सकता। संघ की स्थापना के समय डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी की आयु 35 वर्ष थी और दूसरे सरसंघचालक गुरुजी 37 वर्ष की आयु में इस दायित्व पर आए थे। संघ में शिक्षा पूरी करने के बाद अनेक युवाओं ने अपना करियर छोड़कर देशभर में प्रचारक के रूप में कार्य किया। संघ की यात्रा में युवाओं का योगदान हमेशा महत्वपूर्ण रहा है और आज संगठन में सभी पीढ़ियों के लोग साथ काम कर रहे हैं।



युवाओं से कहा कि करियर का अर्थ केवल अधिक पैसा कमाना या ऊँचा पद पाना नहीं, बल्कि अपने चुने हुए कार्य में उत्कृष्टता हासिल करना है। जीवन में सुविधा और व्यक्तिगत सुरक्षा से अधिक महत्वपूर्ण है उसे सार्थक बनाना। युवाओं को देश और समाज के लिए जिम्मेदारी, अनुशासन, अच्छे संस्कार और नैतिक साहस के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

## सुनील आंबेकर जी ने बताया, विविधता में एकता ही भारत की पहचान



युवा संवाद कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर जी ने कानपुर में युवाओं को भारत की सभ्यता, संस्कृति और ऐतिहासिक विरासत को समझने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि भारत की पहचान किसी एक भाषा, जाति, नस्ल या पूजा-पद्धति से नहीं, बल्कि हजारों वर्षों से विकसित साझा सांस्कृतिक चेतना से बनी है। उन्होंने युवाओं को अपनी जड़ों, पूर्वजों और देश की मिट्टी से जुड़े रहने की आवश्यकता समझाई। उनके अनुसार, भारत में भाषाएं, परंपराएं और पूजा-पद्धतियां अलग-अलग हो सकती हैं, लेकिन समाज को जोड़ने वाले मूल जीवन-मूल्य समान हैं। धर्म को केवल पूजा-पद्धति तक सीमित न मानते हुए, ऐसे जीवन-मार्ग के रूप में समझाया, जिसमें व्यक्ति स्वयं भी जिए और दूसरों को भी जीने दे। उन्होंने ट्रैफिक नियमों का उदाहरण देते हुए बताया कि जैसे नियमों का पालन करके अलग-अलग वाहन साथ चल सकते हैं, वैसे ही साझा जीवन-मूल्यों के आधार पर विभिन्न समुदाय मिल-जुलकर रह सकते हैं।

भारतीय समाज को अपनी ऐतिहासिक स्मृति और सांस्कृतिक विरासत को पहचानना चाहिए। युवाओं के लिए आवश्यक है कि वे भारत को उसकी अपनी दृष्टि से समझें, विविधता का सम्मान करें और सामाजिक एकता को मजबूत बनाने में योगदान दें।

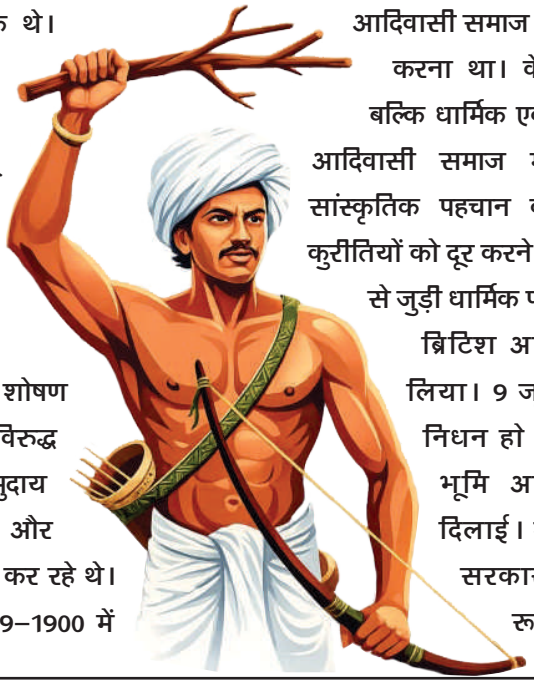
## युवाओं को राष्ट्र प्रथम रखना होगा



दिल्ली में युवा कुम्भ कार्यक्रम में रा.स्व.संघ के अखिल भारतीय प्रचारक मुकुल कानिटकर जी ने युवाओं को अपने जीवन का उद्देश्य पहचानने और राष्ट्रहित को प्राथमिकता देने का संदेश दिया। युवा अवस्था जीवन की दिशा तय करने का महत्वपूर्ण समय है। इस दौरान युवाओं को विचार करना चाहिए कि वे जीवन में क्या करना चाहते हैं और उनके जन्म का उद्देश्य क्या है। उन्होंने क्रिकेट का उदाहरण देते हुए समझाया कि व्यक्तिगत उपलब्धि से अधिक महत्वपूर्ण राष्ट्र की जीत और सामूहिक सफलता हो सकती है। भारत की सभ्यता और संस्कृति की विशेषता बताते हुए कहा कि भारत की शक्ति केवल आर्थिक या सैन्य सामर्थ्य में नहीं, बल्कि उसकी सांस्कृतिक विरासत और मानव कल्याण की भावना में भी निहित है। भारत की परंपरा समस्त प्राणियों के सुख और शांति की कामना करती है। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे अपने जीवन को केवल व्यक्तिगत सफलता तक सीमित न रखें, बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी बनें।

# भगवान बिरसा मुंडा : 'धरती आबा' जिन्होंने आदिवासी अधिकारों के लिए किया ऐतिहासिक संघर्ष

भगवान बिरसा मुंडा भारत के महान आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक और जननायक थे। उन्हें सम्मानपूर्वक 'धरती आबा' कहा जाता है, जिसका अर्थ है 'धरती के पिता'। उनका जन्म 15 नवंबर 1875 को उलिहातू गाँव में हुआ था, जो वर्तमान में झारखंड के खूंटी जिले में स्थित है। उनके पिता का नाम सुगना मुंडा और माता का नाम करमी हातू था।



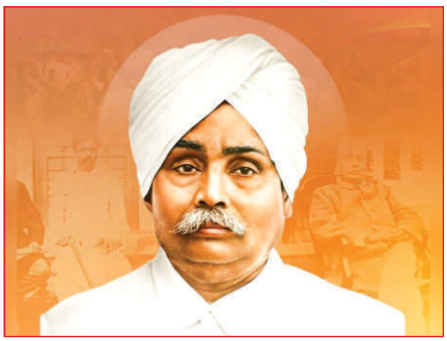
बिरसा मुंडा ने ब्रिटिश शासन, जमींदारी शोषण और आदिवासियों की जमीन पर कब्जे के विरुद्ध संघर्ष किया। उस समय आदिवासी समुदाय अपने पारंपरिक भूमि अधिकारों, जंगलों और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे थे। बिरसा मुंडा ने लोगों को एकजुट कर 1899–1900 में 'उलगुलान' (महान विद्रोह) का नेतृत्व किया। उनका उद्देश्य आदिवासी समाज के अधिकारों और स्वशासन की रक्षा करना था। वे केवल स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं, बल्कि धार्मिक एवं सामाजिक सुधारक भी थे। उन्होंने आदिवासी समाज में जागरूकता फैलाने, पारंपरिक सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने और सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। उनके अनुयायियों से जुड़ी धार्मिक परंपरा को 'बिरसाइत' कहा जाता है।

ब्रिटिश अधिकारियों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। 9 जून 1900 को राँची जेल में उनका निधन हो गया। उनके संघर्ष ने आदिवासी भूमि अधिकारों के प्रश्न को प्रमुखता दिलाई। उनकी जयंती 15 नवंबर को भारत सरकार 'जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाती है।

# पंजाब केसरी लाला लाजपत राय : जिन्होंने देश की आजादी के लिए किया जीवन समर्पित

लाला लाजपत राय भारत के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, लेखक और राष्ट्रवादी नेता थे। उन्हें 'पंजाब केसरी' के नाम से जाना जाता है। उनका जन्म 28 जनवरी 1865 को पंजाब के धुड़िके गाँव में हुआ था। उनके पिता मुंशी राधा कृष्ण शिक्षक थे और माता का नाम गुलाब देवी था।

लाला लाजपत राय ने उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा के बाद लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज में कानून की शिक्षा प्राप्त की और आगे चलकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़कर स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे 'लाल–बाल–पाल' की प्रसिद्ध तिकड़ी के प्रमुख सदस्य थे। इस तिकड़ी में उनके साथ बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्र पाल शामिल थे। उन्होंने स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा और ब्रिटिश शासन के विरोध में जनजागरण को बढ़ावा दिया।



उन्होंने शिक्षा और समाज सुधार के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किए। वे आर्य समाज से जुड़े तथा अस्पृश्यता उन्मूलन के पक्षधर रहे। वर्ष 1921 में उन्होंने लाहौर में सर्वेंट्स ऑफ द पीपल सोसाइटी (लोक सेवक मंडल) की स्थापना की। वे लेखक और पत्रकार भी थे। उनकी प्रमुख पुस्तकों में Young India, Unhappy India और England*s Debt to India शामिल हैं।

30 अक्टूबर 1928 को लाहौर में साइमन कमीशन के विरोध में निकाले गए प्रदर्शन का उन्होंने नेतृत्व किया। इस दौरान पुलिस के लाठीचार्ज में वे गंभीर रूप से घायल हुए। इसके बाद 17 नवंबर 1928 को उनका निधन हो गया। उनका जीवन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

# ऊदा देवी पासी : सिकंदर बाग में अंग्रेजों से लोहा लिया

–डेस्क

ऊदा देवी पासी 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की उन वीरांगनाओं में थीं, जिन्होंने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका नाम उत्तर प्रदेश के लखनऊ स्थित सिकंदर बाग के ऐतिहासिक युद्ध से जुड़ा है। वह पासी समुदाय से थीं और आज उन्हें महिला शौर्य तथा स्वतंत्रता के लिए संघर्ष के प्रतीक के रूप में याद किया जाता है।



भारत सरकार के 'आजादी का अमृत महोत्सव' पोर्टल के अनुसार, ऊदा देवी लखनऊ के उजिरियाँव गाँव की रहने वाली थीं। उन्होंने 1857 के विद्रोह के दौरान बेगम हजरत महल के शासनकाल में महिलाओं का एक सैन्य दस्ता गठित किया था। उनके पति मक्का पासी भी अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में शामिल थे और सिकंदर बाग के युद्ध में शहीद हुए थे।

16 नवंबर 1857 को लखनऊ के सिकंदर बाग में अंग्रेजी सेना और भारतीय विद्रोहियों के बीच भीषण संघर्ष हुआ। ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार, ऊदा देवी ने पेड़ पर मोर्चा लेकर अंग्रेजी सैनिकों का सामना किया। कुछ विवरणों में उनके द्वारा बड़ी संख्या में ब्रिटिश सैनिकों को मार गिराने का उल्लेख मिलता है, हालांकि सैनिकों की सटीक संख्या के बारे में अलग-अलग विवरण हैं। अंततः वह इसी संघर्ष में वीरगति को प्राप्त हुईं।

आज सिकंदर बाग में उनकी स्मृति से जुड़ा स्मारक मौजूद है। ऊदा देवी पासी का जीवन याद दिलाता है कि 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं और वंचित समुदायों के लोगों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया था। उनका साहस भारतीय इतिहास की प्रेरक विरासत का हिस्सा है।

# 1857 के संग्राम की अमर वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई : जिन्होंने झाँसी के स्वाभिमान के लिए दिया बलिदान



रानी लक्ष्मीबाई भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857) की प्रमुख वीरांगनाओं में से एक थीं। उनका बचपन का नाम मणिकर्णिका तांबे था और उन्हें प्यार से 'मनु' कहा जाता था। उनका जन्म 19 नवंबर 1828 को वाराणसी (काशी) में हुआ था। उनके पिता का नाम मोरोपंत तांबे और माता का नाम भागीरथी बाई था।

उनका विवाह झाँसी के महाराजा गंगाधर राव से हुआ, जिसके बाद वे रानी लक्ष्मीबाई कहलाईं। उनके पुत्र की कम उम्र में मृत्यु हो गई। बाद में उन्होंने दामोदर राव को गोद लिया। ब्रिटिश शासन ने दत्तक उत्तराधिकारी को मान्यता नहीं दी और झाँसी को अपने अधीन करने का प्रयास किया। रानी लक्ष्मीबाई ने इस निर्णय का विरोध किया और झाँसी की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए संघर्ष किया।

1857 के विद्रोह के दौरान उन्होंने झाँसी में ब्रिटिश सेना का सामना किया। वे साहस, नेतृत्व और स्वाधीनता के संकल्प के लिए प्रसिद्ध हुईं। झाँसी पर अंग्रेजों के कब्जे के बाद वे कालपी पहुँचीं और फिर ग्वालियर के संघर्ष में शामिल हुईं।

18 जून 1858 को ग्वालियर के निकट कोटा-की-सराय में उनका निधन हुआ। उनका संघर्ष भारतीय इतिहास में स्वतंत्रता, स्वाभिमान और साहस का प्रतीक बन गया। रानी लक्ष्मीबाई की वीरता की स्मृति आज भी देशभर में सम्मान के साथ की जाती है।

# उत्तर प्रदेश के खेल समाचार

संकलनकर्ता– कुमारी श्रेयांशी, राजनीति विज्ञान विभाग, चौधरी, चरण सिंह विश्वविद्यालय (मेरठ)




**एशियन गेम्स में उत्तर प्रदेश के खिलाड़ियों का ऐतिहासिक प्रदर्शन, 16 पदकों से बढ़ाया देश का मान :** खेल के मैदान में जब प्रतिभा, परिश्रम, अनुशासन और दृढ़ संकल्प का संगम होता है, तो सफलता की नई इबारत लिखी जाती है। उत्तर प्रदेश के खिलाड़ियों ने एशियन गेम्स में शानदार प्रदर्शन करते हुए देश का मान–सम्मान बढ़ाया है। प्रदेश के 12 खिलाड़ियों ने सामूहिक रूप से 16 पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। इन पदकों में 5 स्वर्ण, 3 रजत और 8 कांस्य पदक शामिल हैं। खिलाड़ियों की यह उपलब्धि न केवल प्रदेश की खेल प्रतिभा का प्रमाण है, बल्कि भारतीय खेल जगत के लिए भी गौरव का विषय है। इन खिलाड़ियों की सफलता के पीछे वर्षों का कठिन अभ्यास, शारीरिक और मानसिक अनुशासन, प्रशिक्षकों का मार्गदर्शन तथा परिवारों का निरंतर सहयोग रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में पदक जीतना केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि देश की खेल क्षमता और युवाओं की असीम संभावनाओं का परिचायक भी है। खिलाड़ियों ने अपने प्रदर्शन से यह सिद्ध किया है कि उचित अवसर, संसाधन और प्रोत्साहन मिलने पर उत्तर प्रदेश के युवा वैश्विक मंच पर अपनी विशिष्ट पहचान बना सकते है। खिलाड़ियों की उपलब्धियों को सम्मानित करने और प्रदेश में खेल संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से योगी सरकार ने इन खिलाड़ियों को कुल 25.5 करोड़ रुपये की नकद पुरस्कार राशि देने की घोषणा की है। यह आर्थिक प्रोत्साहन खिलाड़ियों के परिश्रम का सम्मान करने के साथ–साथ उन्हें भविष्य की प्रतियोगिताओं के लिए प्रेरित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

**खेलों के उज्ज्वल भविष्य की ओर उत्तर प्रदेश :** आज खेल केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, स्वास्थ्य, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और राष्ट्रीय एकता का प्रभावशाली माध्यम हैं। उत्तर प्रदेश में खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए आधुनिक खेल सुविधाओं, प्रशिक्षकों, खेल अकादमियों और प्रतिभा खोज कार्यक्रमों का विस्तार विशेष महत्व रखता है। एशियन गेम्स में 16 पदकों की उपलब्धि प्रदेश के युवाओं को यह संदेश देती है कि लक्ष्य के प्रति समर्पण और निरंतर प्रयास से बड़ी से बड़ी सफलता प्राप्त की जा सकती है। इन खिलाड़ियों की उपलब्धि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनेगी और प्रदेश में खेलों को नई ऊर्जा प्रदान करेगी। पदकों की यह चमक केवल खिलाड़ियों की सफलता नहीं, बल्कि उत्तर प्रदेश के उभरते खेल भविष्य की उम्मीदों का प्रतीक है।

**प्रतापगढ़ के 14 वर्षीय विष्णु सरोज का क्रिकेट में धमाका, चाइनामैन स्पिन से राष्ट्रीय स्तर पर बनाई पहचान :** सपने उम्र के मोहताज नहीं होते। यदि उनमें जुनून, प्रतिभा और निरंतर मेहनत का साथ हो, तो छोटी–सी उम्र में भी बड़ी उपलब्धियों की नींव रखी जा सकती है। उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले के 14 वर्षीय युवा क्रिकेटर विष्णु सरोज ने अपनी शानदार गेंदबाजी से इस कहावत को चरितार्थ किया है। राज सिंह डूंगरपुर ट्रॉफी में चार मैचों में 13 विकेट लेकर विष्णु ने राष्ट्रीय स्तर पर क्रिकेट प्रेमियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। विष्णु की इस उपलब्धि की सबसे खास बात उनकी गेंदबाजी शैली है। वह चाइनामैन स्पिन गेंदबाज हैं, जो बाएं हाथ से कलाई के सहारे गेंद को सामान्य बाएं हाथ की स्पिन से विपरीत दिशा में घुमाने की क्षमता के लिए जाने जाते हैं। हालाँकि क्रिकेट में निरंतर सफलता के लिए केवल विकेट लेना ही पर्याप्त नहीं होता। गेंद पर नियंत्रण, सही लाइन–लेंथ, बल्लेबाज की कमजोरी को समझना, मानसिक दृढ़ता और परिस्थितियों के अनुसार रणनीति बदलना भी महत्वपूर्ण है। यदि विष्णु इसी प्रकार अभ्यास और अनुशासन के साथ आगे बढ़ते हैं, तो वह अपने खेल को और निखार सकते हैं।

**छोटे शहर से बड़े सपनों तक का सफर :** प्रतापगढ़ जैसे जिले से उभरकर राष्ट्रीय स्तर की क्रिकेट प्रतियोगिता में पहचान बनाना स्थानीय युवाओं के लिए उत्साहजनक संदेश है। देश के अनेक प्रतिभाशाली खिलाड़ी छोटे शहरों और कस्बों से निकलकर अपनी मेहनत के बल पर बड़े मंचों तक पहुँचे हैं। विष्णु की उपलब्धि भी इस बात की ओर संकेत करती है कि प्रतिभा किसी महानगर या बड़े क्रिकेट केंद्र तक सीमित नहीं है।

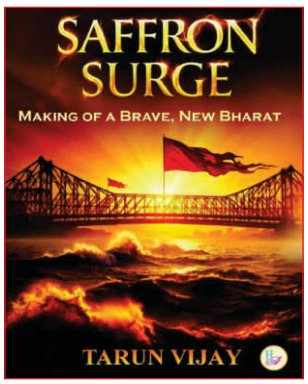
यदि विष्णु को सही मार्गदर्शन और निरंतर अवसर मिलते हैं, तो वह भविष्य में उत्तर प्रदेश और भारतीय क्रिकेट के लिए एक महत्वपूर्ण संभावना बन सकते हैं।

# युवा शक्ति को नई उड़ान देगी उत्तर प्रदेश की नई युवा नीति

समीक्षक –डॉ. अनुपमा भारद्वाज सोशल कल्चरल एंथ्रोपॉलजिस्ट

किसी राष्ट्र की पहचान केवल उसकी भौगोलिक सीमाओं, राजनीतिक व्यवस्थाओं अथवा आर्थिक उपलब्धियों से नहीं बनती। उसकी वास्तविक पहचान उन संस्कारों, परंपराओं, मान्यताओं और सामूहिक स्मृतियों में निहित होती है, जो पीढ़ी–दर–पीढ़ी उसके समाज को एक अदृश्य सूत्र में बाँधे रखती हैं। इसी दृष्टि से वरिष्ठ पत्रकार, चिंतक एवं पूर्व सांसद तरुण विजय की पुस्तक 'Saffron Surge: Making of a Brave, New Bharat' भारतीय सभ्यता और उसके पुनर्जागरण को समझने का एक महत्त्वपूर्ण वैचारिक प्रयास है।

भारत ने अपने हजारों वर्षों के इतिहास में अनेक राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उतार–चढ़ाव देखे हैं। विदेशी आक्रमणों से लेकर औपनिवेशिक शासन तक अनेक ऐसी परिस्थितियाँ आई, जिन्होंने हमारे समाज की संरचना और सोच को प्रभावित किया। इसके बावजूद भारतीय संस्कृति की निरंतरता बनी रही। यह निरंतरता ही हमारी सभ्यता की सबसे बड़ी विशेषता है। तरुण विजय अपनी पुस्तक में इसी सांस्कृतिक जीवटता को रेखांकित करते हुए उस भारत की चर्चा करते हैं, जो अपनी जड़ों को पहचानते हुए एक नई चेतना के साथ आगे बढ़ रहा है। पुस्तक में अयोध्या, काशी, मथुरा और सोमनाथ जैसे स्थलों का उल्लेख केवल धार्मिक आस्था के केंद्रों के रूप में नहीं, बल्कि भारतीय समाज की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्मृतियों के प्रतीकों के रूप में सामने आता है। इन स्थलों के साथ जुड़ी भावनाएँ बताती हैं कि किसी समाज के लिए उसकी सांस्कृतिक धरोहर कितनी गहरी महत्ता रखती है। एक सामाजिक–सांस्कृतिक मानवशास्त्री के रूप में मेरा मानना है कि किसी भी समाज को समझने के लिए उसके इतिहास के साथ–साथ उसकी सामूहिक मनोवृत्ति, लोकविश्वासों और सांस्कृतिक व्यवहारों को समझना भी आवश्यक है। परंपराएँ केवल अतीत की धरोहर नहीं होतीं, वे वर्तमान को दिशा देती हैं और भविष्य की नींव भी तैयार करती हैं। इस दृष्टि से पुस्तक में प्रस्तुत सांस्कृतिक पुनर्जागरण का विचार विशेष रूप से विचारणीय है।




पुस्तक का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति का प्रश्न भी है। राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर लेना और मानसिक रूप से स्वतंत्र होना दो अलग–अलग अवस्थाएँ हैं। स्वतंत्रता के इतने दशकों बाद भी अपनी भाषा, संस्कृति और परंपराओं को लेकर हीनभावना का बने रहना किसी भी समाज के लिए चिंतन का विषय होना चाहिए। अपनी विरासत पर गर्व करना आधुनिकता का विरोध नहीं, बल्कि आत्मविश्वास के साथ आधुनिकता को अपनाने की एक सकारात्मक प्रक्रिया भी हो सकती है। इस पुस्तक की प्रस्तावना राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने लिखी है, जबकि सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबले ने भी अपने विचारों से इसे समृद्ध किया है। इससे पुस्तक के वैचारिक परिप्रेक्ष्य को समझने में सहायता मिलती है।

मेरे विचार से सांस्कृतिक पुनर्जागरण की वास्तविक सार्थकता केवल अतीत के गौरव को याद करने में नहीं, बल्कि उन मानवीय मूल्यों को वर्तमान जीवन में उतारने में है, जिन्होंने भारतीय सभ्यता को सदियों से जीवंत रखा है। सहिष्णुता, सहअस्तित्व, सामाजिक समरसता, ज्ञान के प्रति सम्मान और वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना हमारी सांस्कृतिक पहचान के महत्त्वपूर्ण आधार रहे हैं। साथ ही, इतिहास की पुनर्व्याख्या करते समय तथ्यों, विभिन्न दृष्टिकोणों और समाज की विविधता के प्रति संवेदनशीलता भी आवश्यक है। आत्मगौरव और आत्ममंथन एक–दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि किसी परिपक्व समाज की दो पूरक शक्तियाँ हैं।

'सैफ्रन सर्ज' का मूल स्वर भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता और राष्ट्रीय चेतना के पुनरुत्थान से जुड़ा है। तरुण विजय अपने वैचारिक अनुभवों के माध्यम से पाठकों को यह सोचने के लिए प्रेरित करते हैं कि बदलते वैश्विक परिवेश में भारत की भूमिका क्या होनी चाहिए और उसे अपनी सभ्यतागत विरासत से किस प्रकार शक्ति प्राप्त हो सकती है। विशेष रूप से युवा पीढ़ी के लिए यह विमर्श महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि आधुनिक तकनीक और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के युग में अपनी सांस्कृतिक पहचान को समझना भी उतना ही आवश्यक है जितना नई उपलब्धियों की ओर बढ़ना।

अंततः यह पुस्तक भारतीय इतिहास, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और बदलती राष्ट्रीय चेतना में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए विचारोत्तेजक है। इससे पाठक सहमत हों अथवा कुछ प्रश्नों पर भिन्न दृष्टिकोण रखें, यह उन्हें भारत के अतीत और भविष्य के संबंध पर विचार करने का अवसर अवश्य देती है। क्योंकि किसी राष्ट्र का वास्तविक उत्कर्ष तभी संभव है, जब वह अपनी जड़ों से शक्ति लेकर भविष्य की ओर बढ़े और अपनी सांस्कृतिक विरासत को संपूर्ण मानवता के कल्याण से जोड़ सके।

# प्रार्थना सभा की आड़ में धर्मांतरण का आरोप, तीन आरोपी गिरफ्तार

संकलनकर्ता – डॉ. रामशंकर, सहायक प्राध्यापक, आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा

**16 सितंबर 2026 : बैतूल, मध्य प्रदेश - धर्मांतरण गतिविधियों के आरोप में पांच गिरफ्तार, धार्मिक साहित्य और दस्तावेज जब्त :** मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के आमला थाना क्षेत्र में पुलिस ने धर्मांतरण से जुड़ी कथित गतिविधियों के आरोप में पांच लोगों को गिरफ्तार किया। अमर उजाला की रिपोर्ट के अनुसार, पुलिस ने एक घर से धार्मिक साहित्य, पुस्तिकाएं, पंपलेट और अन्य दस्तावेज जब्त किए। आरोपियों के विरुद्ध मध्य प्रदेश धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम तथा भारतीय न्याय संहिता की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर जाँच शुरू की गई।

**18 सितंबर 2026 : उज्जैन, मध्य प्रदेश - मोहन भागवत ने युवाओं को धर्म के मूल्यों का पालन करने का संदेश दिया :** राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक मोहन भागवत ने उज्जैन में आयोजित युवा धर्म संसद में युवाओं को संबोधित किया। एनडीटीवी की रिपोर्ट के अनुसार, उन्होंने धर्म को केवल वृद्धावस्था तक सीमित विषय मानने के बजाय जीवन और आचरण से जुड़ा दायित्व बताया। उन्होंने दूसरे पूजा–पद्धतियों के प्रति सम्मान तथा अहंकार से बचने की बात भी कही। यह कार्यक्रम युवा पीढ़ी, धार्मिक मूल्यों और आरएसएस की वैचारिक दृष्टि के संदर्भ में उल्लेखनीय रहा।

**20 सितंबर 2026 : सीधी, मध्य प्रदेश - प्रार्थना सभा की आड़ में धर्मांतरण का आरोप, तीन आरोपी गिरफ्तार :** मध्य प्रदेश के सीधी जिले के बहरी थाना क्षेत्र में पुलिस ने एक किराए के मकान में आयोजित प्रार्थना सभा के संबंध में धर्मांतरण के आरोप में तीन लोगों को गिरफ्तार किया। अमर उजाला की रिपोर्ट के अनुसार, पुलिस ने मौके से प्रार्थना पुस्तकें और अन्य सामग्री बरामद की। आरोपियों के विरुद्ध मध्य प्रदेश धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया और उन्हें अदालत में पेश किया गया, जहाँ से उन्हें जेल भेज दिया गया। बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने सभा में लोगों को प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित करने का आरोप लगाया था। पुलिस ने मामले की जाँच शुरू की।

**28 सितंबर 2026 : प्रयागराज, उत्तर प्रदेश - वीएचपी की बैठक में संतों ने धर्म और संस्कृति की रक्षा का आह्वान किया :** प्रयागराज के अलोपीबाग स्थित शंकराचार्य आश्रम में विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) के काशी प्रांत मार्गदर्शक मंडल की बैठक आयोजित की गई। अमर उजाला की रिपोर्ट के अनुसार, बैठक में संतों ने हिंदू धर्म और संस्कृति की रक्षा तथा कथित धर्मांतरण गतिविधियों का विरोध करने पर जोर दिया। संत समाज ने कहा



कि धार्मिक पहचान और सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़े मुद्दों पर वह सक्रिय भूमिका निभाएगा। यह बैठक हिंदू संगठनों की गतिविधियों और धर्मांतरण पर उनके सार्वजनिक रुख के संदर्भ में उल्लेखनीय रही।

**5 अक्टूबर 2026 : नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजनीतिक विमर्श**

**हिंदुत्व पर दिग्विजय सिंह के बयान से विवाद, भाजपा और संतों ने जताई आपत्ति :** कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह के हिंदू धर्म, सनातन परंपरा और हिंदुत्व को लेकर दिए गए बयान पर राजनीतिक विवाद खड़ा हुआ। आजतक की रिपोर्ट के अनुसार, सिंह ने कहा कि धर्मग्रंथों में 'हिंदू' शब्द का उल्लेख नहीं है और भाजपा–आरएसएस सनातन धर्म को अलग ढंग से प्रस्तुत कर रहे हैं। उनके बयान पर साधु–संतों ने आपत्ति जताई और भाजपा नेता विश्वास सारंग ने कानूनी कार्रवाई की मांग की। यह विवाद हिंदू धर्म और हिंदुत्व के अर्थ, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा राजनीतिक उपयोग को लेकर चल रही बहस का उदाहरण है।

**15 अक्टूबर 2026 : नई दिल्ली, राष्ट्रीय - धर्म परिवर्तन के बाद पूर्व जातिगत स्थिति के आधार पर आरक्षण का दावा नहीं सुप्रीम कोर्ट :** सुप्रीम कोर्ट ने एक मामले में मद्रास हाईकोर्ट के उस निर्णय में हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया जिसमें इस्लाम अपनाने वाले व्यक्ति को पूर्व जातिगत स्थिति के आधार पर पिछड़ा वर्ग का लाभ देने से संबंधित आदेश को चुनौती दी गई थी। द इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के अनुसार, अदालत ने कहा कि पूर्व सामाजिक व्यवस्था में रही पिछड़ेपन की स्थिति को अपने आप उस धर्म में स्थानांतरित नहीं माना जा सकता, जिसे व्यक्ति ने अपनाया है। निर्णय में अनुसूचित जाति की संवैधानिक परिभाषा और धर्म परिवर्तन के बाद आरक्षण संबंधी पात्रता पर चर्चा हुई। यह फैसला धार्मिक स्वतंत्रता, जाति, धर्मांतरण और संवैधानिक आरक्षण के संबंध पर महत्वपूर्ण कानूनी विमर्श प्रस्तुत करता है।

संकलनकर्ता : डॉ. नीलम कुमारी



**पूर्व अग्निवीरों के लिए रोजगार के नए द्वार, सरकारी भर्तियों और पुलिस सेवाओं में आरक्षण को मंजूरी :** उत्तर प्रदेश सरकार ने युवाओं को रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराने तथा देश की सेवा कर चुके पूर्व अग्निवीरों के भविष्य को सुरक्षित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। प्रदेश सरकार ने राज्य सरकार की भर्तियों और पुलिस नियुक्तियों में पूर्व अग्निवीरों के लिए विशेष आरक्षण व्यवस्था को मंजूरी प्रदान की है। इस निर्णय से सैन्य प्रशिक्षण और अनुशासन का अनुभव प्राप्त कर चुके युवाओं को सरकारी सेवाओं में आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा।

अग्निवीर योजना के अंतर्गत सेना में सेवा करने वाले युवाओं को शारीरिक दक्षता, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, टीम भावना और कठिन परिस्थितियों में कार्य करने का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त होता है। ये गुण पुलिस एवं अन्य सरकारी सेवाओं के लिए विशेष रूप से उपयोगी माने जाते हैं। ऐसे में पूर्व अग्निवीरों को भर्ती प्रक्रिया में विशेष अवसर देना उनके अनुभव का सदुपयोग करने की दिशा में एक सकारात्मक पहल है। इस निर्णय का उद्देश्य सैन्य सेवा पूरी कर चुके युवाओं को नागरिक जीवन में रोजगार के अवसरों से जोड़ना और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में सहायता प्रदान करना है। पुलिस सेवाओं में उनकी भागीदारी से अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा और राष्ट्रसेवा की भावना को भी बल मिल सकता है। युवाओं के हित में लिया गया यह निर्णय रोजगार सृजन के साथ-साथ देश की सुरक्षा में योगदान देने वाले युवाओं के अनुभव को सम्मान देने का संदेश भी देता है। हालांकि, आरक्षण का वास्तविक लाभ संबंधित भर्ती नियमों, निर्धारित प्रतिशत और पात्रता की शर्तों के अनुसार मिलेगा।

सार रूप में अगर कहे तो यह पहल पूर्व अग्निवीरों के लिए नए अवसर उपलब्ध कराने तथा उनके कौशल को प्रदेश की प्रशासनिक और सुरक्षा व्यवस्था से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

**परिषदीय विद्यालयों में डिजिटल शिक्षा की नई उड़ान, स्मार्ट स्कूलों से बदलेगी बुनियादी शिक्षा की तस्वीर :** उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रदेश की बुनियादी शिक्षा व्यवस्था को अधिक आधुनिक, प्रभावी और तकनीक-संपन्न बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए परिषदीय विद्यालयों को अत्याधुनिक डिजिटल स्मार्ट स्कूलों में विकसित करने की योजना को मंजूरी दी है। इस पहल का उद्देश्य सरकारी विद्यालयों में शैक्षिक सुविधाओं को बेहतर बनाना तथा विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराना है। आज के डिजिटल युग में शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं रह गई है। स्मार्ट कक्षाओं, डिजिटल शिक्षण सामग्री, आधुनिक शिक्षण उपकरणों और तकनीक आधारित गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया को अधिक रोचक एवं प्रभावी बनाया जा सकता है। स्मार्ट स्कूलों की अवधारणा इसी आवश्यकता को ध्यान में रखकर विकसित की गई है।

परिषदीय विद्यालयों में आधुनिक सुविधाओं का विस्तार होने से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को बेहतर शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराने में सहायता मिल सकती है। विशेष रूप से आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों को डिजिटल शिक्षा से जोड़ना शैक्षिक समानता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। इससे विद्यार्थियों में तकनीकी समझ, रचनात्मकता, तार्किक क्षमता और आधुनिक ज्ञान के प्रति रुचि विकसित करने की संभावनाएँ बढ़ेंगी।

इस योजना की सफलता के लिए केवल डिजिटल उपकरण उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं होगा। विद्यालयों में बिजली, इंटरनेट, उपकरणों के रखरखाव, शिक्षकों के प्रशिक्षण और गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री की उपलब्धता पर भी ध्यान देना आवश्यक होगा। साथ ही, तकनीक का उपयोग विद्यार्थियों की आयु, सीखने की जरूरतों और स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप किया जाना चाहिए।

स्मार्ट स्कूलों का विकास प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था को भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने की दिशा में सकारात्मक पहल है। प्रभावी क्रियान्वयन के माध्यम से यह योजना सरकारी विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने, डिजिटल विभाजन कम करने और विद्यार्थियों को आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।



# मां विंध्यवासिनी धाम

- अशोक सिन्हा, उपाध्यक्ष, विश्व संवाद केन्द्र, अवध



वाराणसी के पड़ोसी जनपद मिर्जापुर में माँ विंध्यवासिनी देवी का धाम है जो सनातन आस्था का एक प्रमुख केंद्र है। माँ विंध्यवासिनी के प्राकट्य की अदभुत कथा है। श्री ब्रह्मा के पुत्र स्वयामभुव मनु और उनकी पत्नी सतरूपा मंदाकिनी के तट पर आदि शक्ति के दर्शन के लिए अत्यंत कठोर तपस्या कर रहे थे। उनकी मनोकामना माँ विंध्यवासिनी देवी के प्रत्यक्ष दर्शन की थी। अविकल तपस्या के परिणामस्वरूप उन्हें माँ के दिव्य और मनोहर छवि का भान हो गया। उन्होंने माँ विंध्यवासिनी के प्रतिमा की रचना की एवं श्रद्धा और विश्वास के साथ षोड्षोपचार विधि से पूजन अर्चन किया। सम्पूर्ण आराधना के मध्य मनु और सतरूपा ने उपवास और संयम के साथ माँ के चरण कमलों पर अपना ध्यान एकाग्र किया। उनकी निष्ठा पर प्रसन्न हो कर माँ विंध्यवासिनी अपने ज्योतिर्मय रूप में प्रगट हुई और कहा – मैं तुम दोनों की साधना से प्रसन्न हूँ । अब मैं विंध्य शिखर पर जा रहीं हूँ जहाँ मैं विंध्यवासिनी के रूप में पूजित होऊँगी। इसके बाद त्रिपुर सुंदरी आद्यशक्ति माँ विंध्यधाम में अवतरित हुई।

विंध्यधाम और आदिशक्ति का उल्लेख औसनस, मार्कण्डेय, देवी भागवत, स्कंद, अग्नि तथा शिवपुराण में है। औसनस उपपुराण के एक से इकतालीस अध्याय तक विंध्य महात्म्य पर ही विस्तार से वर्णन है। लक्ष्मीस्वरूपा माँ विंध्यवासिनी के आगमन पर महाकाली खोह तथा सरस्वती स्वरूपा योगमाया के अष्टभुजा मंदिर पर आने से यहाँ ज्ञान, कर्म और इक्षाशक्ति का त्रिकोण बनता है। सांसारिक इच्छा से आने वाले साधक में ऊर्ध्वमुखी विचारधारा बनने लगती है। देश के विभिन्न भागों से श्रद्धालु मान के दर्शन – पूजन करने के लिए विंध्यधाम आतें हैं । योगी सरकार में यहाँ भव्य विंध्यधाम कारीडोर का निर्माण हो चुका है। नवरात्रि में यहाँ भक्तों की भारी भीड़ होती है। लाखों श्रद्धालु यहाँ माँ के दर्शन पूजन कर मत्था टेकते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ मुंडन संस्कार भी संपन्न होता है। धाम माँ गंगा के तट पर बना है अतः माँ गंगा का पहले स्नान कर के श्रद्धालु अपने पुत्र और पुत्रियों का सविधि मुंडन कराते हैं।

विंध्याचल केवल मंदिरों का समूह नहीं, बल्कि प्राचीन काल से ऋषियों, साधकों और शक्ति–उपासकों की तपोभूमि माना जाता है। यहाँ वैदिक परंपरा के साथ शक्ति–साधना की विविध धाराएँ विकसित हुईं। इसीलिए विंध्यवासिनी धाम को भक्तजन सिद्धपीठ भी कहते हैं– अर्थात् ऐसा स्थान जहाँ श्रद्धा और साधना से आध्यात्मिक सिद्धि की प्राप्ति की मान्यता है।

मिर्जापुर–विंध्याचल क्षेत्र की एक विशेषता यह भी है कि यहाँ पवित्र गंगा और विंध्य पर्वतमाला का सांस्कृतिक–सांकेतिक संगम होता है। प्रकृति, नदी, पर्वत और शक्ति–उपासना का यह मेल विंध्याचल को विशिष्ट धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहचान प्रदान करता है। माँ विंध्यवासिनी धाम का महात्म्य केवल एक प्राचीन मंदिर होने में नहीं है, बल्कि यह भारत की शक्ति–उपासना, पुराण परंपरा, लोक–आस्था और सांस्कृतिक चेतना का जीवंत केंद्र है। विंध्याचल में माँ विंध्यवासिनी शक्ति, कालीखोह में साहस और अष्टभुजा में ज्ञान इन तीनों का समन्वय भारतीय शक्ति–दर्शन का सुंदर प्रतीक है। धाम दिल्ली हावड़ा मेन रेलवे लाइन पर विन्ध्याचल रेलवे स्टेशन से जुड़ा है। निकटतम हवाई अड्डा प्रयागराज तथा वाराणसी के लालबहादुर शास्त्री हवाई अड्डे से धाम जुड़ा हुआ है।

# AI और पत्रकारिता : सच की कसौटी

संकलनकर्ता –आर्या कुमारी (छात्रा, आई.एम.एस., गाजियाबाद)

खबरों की दुनिया की मान्यता हमेशा सटीकता से रही है। लेकिन आज की डिजिटल दुनिया वाली पत्रकारिता, अब हमे ये भी सिखाने लगी है की सटीकता एक पल के लिए थम सकती है किंतु तीव्रता नहीं। इससे मालूम होता है की पत्रकारिता केवल सच दिखाने तक नहीं बल्कि सबसे पहले कौन दिखाएगा इस पर भी निर्भर करती है। पहले हम पहले हम की होड़ में सभी रेस में अव्वल आना चाहते हैं।




आज के दौर में एआई ने इस दौड़ को काफी हद तक आसान बना दिया है। खबरों की खरीद–फरोख्त में खबरें बिक जाती है और सच की पारदर्शिता एक फटके हुए गेहूं के घुन समान बिखर जाती है। जिस खबर का उद्देशय मूल रुप से आम जनता तक पहुंचना है वो कई बार टीआरपी, व्यूज और वायरल होने के चक्कर में अपनी मान्यता खो देती है। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या पत्रकारिता की आत्मा अपना देह त्याग रही है।

ऐसे में दाखिल आकड़े ये भी बताते है कि एआई कई मायने में पत्रकारिता को सुविधाजनक भी बना रहा है। खबरों की छानबीन से लेकर बड़े आँकड़ों को समझना, घंटो का विश्लेषण पलभर में कर देना। इससे पत्रकारों के समय की बचत होती है। आज एआई की मदद भले ही हमारी पत्रकारिता को सरल ओर सुचारु बना रहा है, किंतु एक ओर पाठक की विश्वसनीयता भी डगमगाती नजर आने लगती है। क्योकि आज का एआई तकनीक फर्राटे से बिना जाँच–पड़ताल के ऐसी कई खबरे तैराता है जिससे असली और नकली की पहचान मुश्किल हो गई है।

इसलिए एआई को पत्रकारिता का प्रतिरुप न मानकर उसका सहयोगी उपकरण मानना चाहिए। पत्रकारिता में तकनीक का इस्तेमाल होना चाहिए लेकिन विश्वसनीयता की बली देकर नहीं बल्कि सत्यनिष्ठा और सुचारु रुप से होना चाहिए। भले एक अखबार की कीमत 6 रु होती है, लेकिन उसकी जानकारी और ज्ञान लाख रुपये में भी नहीं बिक सकती है। सही समाचार की महत्ता देश के हर नागरिक का अधिकार है।

# डिजिटल क्रांति से आत्मनिर्भर बनता भारत

संकलनकर्ता –आभांशु द्विवेदी




भारत की तरक्की अब केवल नई सड़कों, बड़ी इमारतों और आधुनिक उद्योगों से नहीं मापी जा सकती। आज बैंक से पैसे भेजने से लेकर कारोबार चलाने तक, हमारी जिंदगी डेटा और डिजिटल तकनीक पर निर्भर है। ऐसे में आत्मनिर्भर भारत के लिए जरूरी है कि देश केवल इन तकनीकों का इस्तेमाल न करे, बल्कि उन्हें बनाने, सुरक्षित रखने और बेहतर बनाने की क्षमता भी विकसित करे। इसी बदलते भारत की कहानी में कुछ नए तकनीकी प्रयास अपनी जगह बना रहे हैं। सबसे पहले बात डेटा की सुरक्षा की। कल्पना कीजिए, किसी बैंक या सरकारी संस्था का जरूरी डेटा साइबर हमले की चपेट में आ जाए। ऐसे में खतरे को जल्दी पहचानना और नुकसान रोकना बेहद जरूरी है। हैदराबाद की Spharaka Networks का SAGE इसी चुनौती पर काम कर रहा है। यह साइबर सुरक्षा के लिए बनाया गया AI मॉडल है, जो कंप्यूटर, नेटवर्क और दूसरी डिजिटल प्रणालियों से मिलने वाले संकेतों का विश्लेषण करके खतरों की जाँच और उनसे निपटने में मदद करता है। इसकी एक खास बात यह है कि इसे संस्था के अपने डेटा सेंटर में चलाने के लिए बनाया गया है। इससे संवेदनशील जानकारी पर नियंत्रण बनाए रखने में मदद मिल सकती है।

लेकिन सुरक्षित डिजिटल व्यवस्था के लिए भरोसेमंद सॉफ्टवेयर भी जरूरी है। भारतीय प्लेटफॉर्म Keploy इसी जरूरत को पूरा करने का प्रयास करता है। यह सॉफ्टवेयर के असली इस्तेमाल से मिले डेटा की मदद से अपने आप टेस्ट तैयार करता है। आसान शब्दों में कहें तो, किसी सॉफ्टवेयर में बदलाव करने के बाद यह जाँचने में मदद मिलती है कि कोई नई गलती तो नहीं आ गई। इससे डेवलपर्स के लिए सॉफ्टवेयर की जाँच करना आसान हो सकता है। इसी कड़ी में डिजिटल भुगतान व्यवस्था को बेहतर बनाने की दिशा भी महत्वपूर्ण है। NPCI के AiNxt और AtOM अलग–अलग जरूरतों पर काम करते हैं। AiNxt में ऐसे AI टूल शामिल हैं, जो सॉफ्टवेयर बनाने और रोजमर्रा के कामों को आसान कर सकते हैं। वहीं, AtOM भुगतान व्यवस्था में बड़े तकनीकी बदलावों को तैयार करने, लागू करने और उनकी जाँच से जुड़ी प्रक्रिया को व्यवस्थित करने में मदद करता है। इन प्रयासों से एक बात साफ होती है। डिजिटल आत्मनिर्भरता केवल अपने ऐप बनाने का नाम नहीं है। इसका असली अर्थ है उन तकनीकों को समझना, विकसित करना और सुरक्षित रखना, जिन पर देश का भविष्य तेजी से निर्भर हो रहा है।

# ₹25 हजार की नौकरी छोड़ी, खेती से कमाने लगे ₹70 हजार महीना

–डेस्क

रुद्रप्रयाग। पहाड़ में खेती को घाटे का सौदा मानकर जहां कई युवा रोजगार की तलाश में गांव छोड़ रहे हैं, वहीं रुद्रप्रयाग के अजय नेगी ने खेती–बागवानी को अपनी ताकत बनाकर नई मिसाल पेश की है। कभी पशुपालन विभाग में 25 हजार रुपये प्रतिमाह की नौकरी करने वाले अजय आज खेती से 60 से 70 हजार रुपये मासिक आय अर्जित कर रहे हैं। उनकी इसी मेहनत और सफलता के लिए उन्हें पंतनगर में आयोजित 120वें अखिल भारतीय किसान मेले एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी में 'प्रगतिशील कृषक सम्मान' से नवाजा गया। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल और कृषि मंत्री गणेश जोशी ने उन्हें सम्मानित किया।

अगस्त्यमुनि विकासखंड की ग्राम पंचायत भणज निवासी अजय नेगी की जिंदगी में बदलाव वर्ष 2019–20 में आया। पिता की तबीयत खराब होने पर उन्होंने संविदा की नौकरी छोड़कर गांव लौटने का फैसला किया। इसके बाद उन्होंने सरकारी योजनाओं और विभागीय प्रशिक्षण का लाभ लेकर खेती–बागवानी को रोजगार बनाया।

शुरुआत सब्जी और फल उत्पादन के साथ जूस के छोटे



कारोबार से हुई। धीरे–धीरे मेहनत रंग लाई और उन्होंने धान, दलहन, मंडुवा, झंगोरा व गेहूं के साथ कीवी, माल्टा, नारंगी, नींबू, ब्रोकली, मिर्च और अदरक जैसी फसलों का उत्पादन शुरू किया। कीवी और माल्टा उनकी आय के प्रमुख स्रोतों में शामिल हैं।

अजय ने कृषि एवं उद्यान विभाग, कृषि विज्ञान केंद्र जाखधार, रानीचौरी और पंतनगर विश्वविद्यालय सहित विभिन्न संस्थानों से प्रशिक्षण लेकर खेती के तरीके बेहतर किए। उनकी सफलता अब व्यक्तिगत उपलब्धि तक सीमित नहीं है। वह करीब 60 किसानों को बागवानी से जोड़कर मार्गदर्शन दे रहे हैं।

# सहारनपुर में दिव्यांगों को मिला हुनर का सहारा, डिजाइनर कैंडल बनाकर बनेंगे आत्मनिर्भर



सहारनपुर। हुनर और हौसले के दम पर आत्मनिर्भर बनने की दिशा में सहारनपुर के दिव्यांग महिला–पुरुष नई राह बना रहे हैं। RSETI और इनेबल इंडिया की पहल पर उन्हें मोमबत्ती बनाने का निशुल्क प्रशिक्षण दिया जा रहा है। दीपावली से पहले यहां दिव्यांग महिलाएं सैकड़ों तरह के आकर्षक डिजाइन वाली कैंडल तैयार कर रही हैं।

आमतौर पर मोमबत्ती के कारोबार को छोटा व्यवसाय माना जाता है, लेकिन प्रशिक्षण के जरिए इसे नए अवसरों से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। प्रतिभागियों को कपल, फूल और बॉल सहित कई आकर्षक डिजाइनों की कैंडल बनाना सिखाया जा रहा है। इनकी खास बनावट और सजावटी रूप इन्हें सामान्य मोमबत्तियों से अलग बनाते हैं।

दीपावली के दौरान सजावटी कैंडल की मांग बढ़ने के कारण यह प्रशिक्षण दिव्यांगजनों के लिए रोजगार का अवसर बन सकता है। तैयार उत्पादों को ऑफलाइन बाजार के साथ ऑनलाइन माध्यम से बेचने की संभावनाएं भी हैं।

इस पहल का उद्देश्य दिव्यांग महिला–पुरुषों को हुनर सिखाकर आर्थिक रूप से सक्षम बनाना और उन्हें स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है। प्रशिक्षण के माध्यम से वे अपने कौशल को कारोबार में बदलने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

# हनुमान अंश
# श्रद्धा, विश्वास और मानवता की आध्यात्मिक यात्रा

फिल्म समीक्षा –डॉ. अनुपमा भारद्वाज सोशल कल्चरल एंथ्रोपॉलजिस्ट

भारतीय संत परंपरा के महान आध्यात्मिक विभूति नीब करौरी बाबा के जीवन एवं उनके विलक्षण व्यक्तित्व पर आधारित फिल्म 'हनुमान अंश' आस्था, भक्ति, अलौकिक अनुभूतियों और मानवीय संवेदनाओं का हृदयस्पर्शी संगम है। इस फिल्म ने न केवल दर्शकों के मन में अपनी विशिष्ट जगह बनाई है, बल्कि भारतीय सिनेमा के इतिहास में एक उल्लेखनीय उपलब्धि भी दर्ज की है।

बॉक्स ऑफिस पर इसकी शुरुआत उत्साहजनक नहीं रही। लेकिन जैसे–जैसे कहानी आगे बढ़ती है और बाबा के जीवन से जुड़े चमत्कारिक एवं अलौकिक प्रसंग सामने आते हैं, फिल्म अपनी लय पकड़ लेती है। दर्शकों की बढ़ती रुचि और एक–दूसरे से मिली सराहना ने धीरे–धीरे इसे सफलता की ऐसी ऊँचाइयों तक पहुँचा दिया, जिसकी कल्पना शायद फिल्म निर्माताओं ने भी नहीं की होगी।



लेखक एवं निर्देशक : डॉ. विशाल चतुर्वेदी
निर्माता : अनुप्रिया नागर, नम्रता जी. सिंह, रागिनी सोना एवं डॉ. विशाल चतुर्वेदी

लगभग 1.8 करोड़ रुपये के सीमित बजट में बनी इस फिल्म ने विश्वभर में 448 करोड़ रुपये से अधिक की कमाई कर एक असाधारण कीर्तिमान स्थापित किया है। सितंबर के अंत तक लगभग 1.53 करोड़ दर्शक इसे सिनेमाघरों में देख चुके थे। इस सफलता ने सिद्ध कर दिया कि बड़े सितारों, विशाल बजट और भव्य प्रचार के बिना भी सशक्त विषयवस्तु और दर्शकों के विश्वास के बल पर सिनेमा इतिहास रच सकता है।

फिल्म की कथा एक ऐसे बालक की पीड़ा से आरंभ होती है, जो अपनी माँ को खो देने के बाद ईश्वर की खोज में निकल पड़ता है। जीवन की इस यात्रा में उसके अनुभव, संघर्ष और आध्यात्मिक अनुभूतियाँ उसे उस सत्य की ओर ले जाती हैं, जहाँ भक्ति का वास्तविक अर्थ प्रेम, करुणा और निःस्वार्थ सेवा में निहित है।

नीब करौरी बाबा की भूमिका में शोभिनव सत्य का सहज एवं प्रभावशाली अभिनय विशेष सराहनीय है। लेखक एवं निर्देशक डॉ. विशाल चतुर्वेदी ने बाबा के सरल व्यक्तित्व, भक्तों के प्रति उनके असीम स्नेह और जीवन से जुड़े अद्भुत प्रसंगों को संवेदनशीलता के साथ पर्दे पर उतारने का प्रयास किया है। फिल्म का मधुर, भक्तिमय संगीत इस फिल्म को अधिक प्रभावपूर्ण बनाता है।

फिल्म की विशेषता यह है कि इसमें चमत्कार केवल कौतूहल उत्पन्न करने का माध्यम नहीं बनते, बल्कि उनके पीछे छिपे आस्था, विश्वास और मानव–कल्याण के गहन संदेश को भी उजागर करते हैं। बाबा का जीवन–दर्शन हमें यह स्मरण कराता है कि ईश्वर की सच्ची आराधना केवल धार्मिक अनुष्ठानों में नहीं, बल्कि प्रत्येक प्राणी के प्रति प्रेम, संवेदना और सेवा–भाव में भी निहित है।

आज के भौतिकतावादी युग में, जब मानवीय संवेदनाएं और आध्यात्मिक मूल्य अनेक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, 'हनुमान अंश' हमें अपनी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक जड़ों से जुड़ने की प्रेरणा देती है।

इस फिल्म की सफलता का सबसे बड़ा संदेश यही है कि सिनेमा की वास्तविक शक्ति केवल धन, तकनीक और सितारों की लोकप्रियता में नहीं, बल्कि उस भावनात्मक और आध्यात्मिक जुड़ाव में है, जो सीधे दर्शकों के हृदय को स्पर्श करता है।

'हनुमान अंश' अपनी भावपूर्ण कथा, चमत्कारिक प्रसंगों और प्रेरक जीवन–दर्शन के बल पर दर्शकों का मन जीतने में सफल रही है।

'हनुमान अंश' केवल एक फिल्म नहीं, बल्कि श्रद्धा, विश्वास और मानवता की ऐसी आध्यात्मिक यात्रा है, जिसे पर्दे पर देखने के साथ हृदय से अनुभव भी किया जा सकता है।

# यंग अचीवर्स

संकलनकर्ता -पल्लवी भारद्वाज

**हर किसी का बचपन अनोखी कल्पनाओं, जिज्ञासाओं और सपनों से भरा होता हैं, लेकिन क्या आप कभी इन कल्पनाएं को कागज़ पर उतार पाए? आज के इस 'यन्ग अचीवर' स्तंभ में हम जानेंगे ऐसे युवा साहित्यकारों के बारे में जिन्होंने बहुत ही कम आयु में अपनी उन्हीं अनोखी कल्पनाओं, जिज्ञासाओं और सपनों को शब्दों और चित्रों के माध्यम से कागज़ पर उतार, उन्हें कहानियों का रूप दिया हैं और लाखों लोगों की प्रेरणा बन गए हैं।**

**अनन्या परंथमन :** तमिलनाडु की रहने वाली इस बालिका



ने कम उम्र में ही अपनी कल्पनाशक्ति को कहानियों का आकर देकर, सारे साहित्य जगत का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर दिया। इस बालिका ने मात्र 3 वर्ष की आयु में अपनी पहली कहानी–पुस्तक Baby Penguin Won*t Brush लिखी, जिसमें उन्होंने एक नन्हे पेंगुइन के माध्यम से बच्चों को स्वच्छता और नियमित रूप से बच्चों के दैनिक रूप से जुड़ी आदतों को एक रोचक अंदाज में प्रस्तुत कर अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया। इस बाल लेखिका ने 12 पृष्ठों की पुस्तक को न ही अपनी कल्पनाओं को शब्दों में ढाला हैं, बल्कि पुस्तक को 11 डिजिटल चित्रों से भी सजाया हैं। अनन्या की इसी कल्पना और रचनात्मकता ने उनकी इस उपलब्धि को 'इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' में 'यंगेस्ट ऑथर ऑफ चिल्ड्रेन स्टोरीबुक' के रूप में दर्ज कर उन्हें कम उम्र के भारतीय साहित्यकारों की सूची में शामिल किया और साथ ही 'एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' द्वारा 'ग्रैंड मास्टर' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

**अभिजिता गुप्ता :** राष्ट्रीय कवि मैथिली शरण गुप्त और संत



कवि सियारामशरण गुप्त के परिवार से ताल्लुक रखने वाली अभिजिता ने केवल 5 वर्ष की आयु में लिखना शुरू कर, 7 साल की उम्र में अपनी पहली बहुचर्चित पुस्तक "हैप्पीनेस ऑल अराउंड" प्रकाशित की। इसके बाद उन्होंने महामारी और बच्चों के अनुभवों पर आधारित कई किताबें लिखी। इस बालिका के साहित्यों में परिवार, खुशी, महामारी, आशा, प्रकृति जैसे विषय दिखाई देते हैं। उनके इसी विभिन्न विषयों की लेखन शांता को देख, उन्हें 'इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' द्वारा दुनिया की सबसे कम उम्र की लेखिका और 'एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' की ओर से 'ग्रैंड मास्टर ऑफ राइटिंग' के खिताब से सम्मानित किया गया। अभिजिता, इसके अलावा प्रतिष्ठित 'ग्लोबल चाइल्ड प्रोड्जी अवार्ड' और राष्ट्रीय–अंतराष्ट्रीय सम्मान भी प्राप्त कर चुकी हैं। अपनी सकारात्मक सोच और प्रेरणादायक रचनाओं से यह बालिका देश के उन चुनिंदा बाल लेखकों की सोची में शामिल हैं, जिन्होंने कम उम्र में प्रकाशकों के साथ बहु पुस्तकीया अनुबंध किया हैं।

**रिद्धान जैन :** पुणे, महाराष्ट्र के रहने वाले रिद्धान जैन एक




बहुमुखी प्रतिभा से धनी, युवा लेखक, उद्यमी, प्रेरक वक्त और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। लेखन की दुनिया में उन्होंने मात्र 8 साल की उम्र में अपनी पहली पुस्तक 'वांस अपॉन इन ऑर माइंड्स' प्रकाशित कर कदम रखा। साहित्य से आगे बढ़ कर इस बालक ने उद्यमिता के क्षेत्र में पांव रखा, जहां उन्होंने 'रिद्धुसवर्ल्ड पब्लिशिंग' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य बच्चों की पुस्तकों को प्रकाशित करने में सहायता करना हैं। रिद्धान को 'इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड' और 'एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' द्वारा देश के सबसे कम उम्र के प्रेरक वक्त एवं प्रशिक्षक के रूप में मान्यता मिली हैं, साथ ही उन्हें 'अंतरराष्ट्रीय शांति बाल पुरस्कार' के लिए भी नामांकित किया जा चुका हैं। यही नहीं, 'टाइम्स ऑफ इंडिया' और 'रिलायंस फाउंडेशन' की '#Unstoppable21' की सोची में इस बालक को सम्मानित भी किया गया। रिद्धान जैन अपनी बहुमुखी प्रतिभा और सामाजिक सोच से आज युवा पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा बन चुके हैं।

**लाविक जैन :** भारत के एक प्रतिभाशाली और उभरते हुए




युवा लेखक लाविक जैन ने नन्ही सी आयु में कल्पना और रोमांच की दुनिया में कदम रखकर सबको चकित कर दिया। राजस्थान के रहने वाले इस बाल लेखक ने मात्र 8 वर्ष की आयु में अपना पहला एडवेंचर– फैंटेसी पुस्तक '।सम़ंदकतपंद झदपहींजे' प्रकाशित कर सबको अपनी कल्पना से चकित कर दिया। प्राचीन रहस्यों, साहसिक कहियां, और काल्पनिक योद्धाओं के प्रति अपनी आकर्षण को पाठकों के सामने लाने के लिए उन्होंने यह किताब लिखी। लाविक की यह पुस्तक छत मित्रो पर आधारित है जिनकी दोस्ती, साहस और आपसी सहयोग उन्हें रहस्यमय और रोमांचक चुनौतियों का सामना करने की शक्ति देते है। उनकी इस प्रकार की रचनाएं यह दर्शाती है कि बच्चों की कल्पनाएं, जिज्ञासा और निरंतर अभ्यास जब शब्दों में ढल जाए और कागज़ पर उतर जाए तो वो लोगों के लिए एक प्रेरणा का श्रोत बन जाता हैं।

# अमर शहीद करतार सिंह



देश–प्रेम के दीवाने तरुण से बाबा लिपट गये और भावविह्वल होकर रोने लगे। बिलखते हुए बाबा फांसी की रस्सी चूमने के लिए तैयार उस क्रांतिकारी युवक को कहने लगे– "करतार! मेरे बेटे! इस प्रकार अपने प्राण गंवाने से क्या लाभ?" अभी बात पूरी ही नहीं हुई थी कि करतार सिंह बीच में ही बोल पड़ा – "बाबा! हिम्मत से काम लो। अच्छा दादा, यह तो बताओ कि मिलखा आज कल कहां है? उसे तो हैजे की बीमारी ने ग्रस लिया है, बेटे! बाबा ने रुँधे कण्ठ से कहा। " और तुम्हारा वह सरदारा? ओह! उसे तो मरे हुए वर्षों गुजर गये हैं।" "तो क्या दादा, आपकी सोच यह कहती है कि आपका यह प्यारा करतार बिस्तर पर पड़ा रह कर कराहता हुआ घुट–घुट कर मर जाये? यह तो अपनी प्यारी मां के दूध को लजाना होगा।"

दादा यह सुनकर स्तब्ध रह गये। कुछ दिनों के पश्चात् करतार सिंह ने हंसते–हंसते स्वतंत्रता देवी की बलिवेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिये।

शहीद की मृत्यु राष्ट्र की संजीवनी है। निश्चय ही ऐसे अमर शहीदों ने देश के जवानों में स्वतंत्रता की अग्नि को प्रज्जवलित किया और इसका यह परिणाम है कि आज हम स्वतंत्र हैं।

संकलनकता- रामकुमार शर्मा

## कविता

भारत के कोने–कोने से
हम सब बच्चे आए हैं।
नई उमंगों, आशाओं का
हम संदेशा लाए हैं।।
हम गिरि की ऊंचाई लाए
हम सागर की गहराई।
हम पश्चिम से लाए
आग–राग राजस्थानी।
हम लाए हैं गंगा–जमुना के
संगम का निर्मल पानी।
भारत के कोने–कोने से
हम सब बच्चे आए हैं।
कल आने वाली दुनिया में
हम कुछ कर दिखलायेंगे।
भारत मां के ऊंचे माथे को
ऊंचा और उठाएंगे।।
भारत के कोने–कोने से
हम सब बच्चे आए हैं।
नई उमंगों, आशाओं का
हम संदेशा लाए हैं।।

मैं एल.एल.एम. का विद्यार्थी हूँ। आपकी पत्रिका में प्रकाशित सकारात्मक समाचार समाज में आशा और प्रेरणा जगाते हैं। आजकल विद्यार्थियों पर पढ़ाई, परीक्षा और भविष्य को लेकर बहुत दबाव रहता है। इसके कारण वे तनाव का सामना करते हैं। मेरा निवेदन है कि विद्यार्थियों की इन समस्याओं को भी पत्रिका में स्थान दिया जाए और उनके समाधान के लिए लोगों को जागरूक किया जाए। आशा है कि आप मेरे विचारों को अपने समाचार–पत्र में स्थान देंगे।

धन्यवाद।

भवदीया,

अंजनी सिंह, एल.एल.एम.

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

मैं आपकी पत्रिका के माध्यम से एक छोटा–सा सुझाव देना चाहती हूँ। आज कई महिलाएँ अपने मेहनत और हौसले से जीवन में सफलता प्राप्त कर रही हैं। मेरा सुझाव है कि आपकी पत्रिका में हर महीने एक कॉलम महिलाओं की उपलब्धियों पर होना चाहिए। इसमें सफल महिलाओं की कहानियाँ प्रकाशित की जाएँ, ताकि दूसरी महिलाओं को भी उनसे प्रेरणा मिले और वे अपने सपनों को पूरा करने के लिए आगे बढ़ें। आशा है कि आप मेरे सुझाव पर ध्यान देंगे।

धन्यवाद।

भवदीया,

इतिश्री

संबलपुर, ओडिशा




केशव संवाद का सितंबर माह का वार्षिक विशेषांक पढ़ने का अवसर मिला। यह अंक अपनी विषयवस्तु, विचारों की विविधता और आकर्षक प्रस्तुति के कारण अत्यंत प्रभावशाली एवं प्रशंसनीय लगा। इस विशेषांक में उत्तर प्रदेश की उपलब्धियों, प्रतिभाओं और विकास यात्रा के अनेक महत्वपूर्ण पहलुओं को स्थान दिया गया है। विशेष रूप से श्री नंदकिशोर शर्मा द्वारा उत्तर प्रदेश के वैज्ञानिकों पर लिखा गया लेख अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगा।

इसी प्रकार मानस वर्मा का 'स्टार्टअप से आत्मनिर्भर' लेख भी विशेष रूप से प्रभावित करता है। निःसंदेह विशेषांक के सभी लेख महत्वपूर्ण एवं संग्रहणीय हैं। फिर भी एक पाठक के रूप में मुझे यह अनुभव हुआ कि इसमें संगीत और सिनेमा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को अपेक्षित स्थान नहीं मिल पाया है। उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान को समृद्ध बनाने में इन दोनों विधाओं का ऐतिहासिक एवं उल्लेखनीय योगदान रहा है। संगीत की गौरवशाली परंपरा हो अथवा सिनेमा जगत में प्रदेश की प्रतिभाओं की उपलब्धियाँ, दोनों ही हमारी सांस्कृतिक विरासत के अभिन्न अंग हैं।

–दिनेश मिश्रा, सिडनी, ऑस्ट्रेलिया

सितंबर माह का केशव संवाद का विशेषांक पढ़ने का अवसर मिला। निःसंदेह यह विशेषांक अपने आप में अत्यंत सुंदर, सारगर्भित एवं सराहनीय है। विविध विषयों, विचारों और उपलब्धियों के अनेक रंगों से सजा यह अंक उत्तर प्रदेश की समृद्ध विरासत, प्रगति और संभावनाओं का एक सुंदर प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है। इस विशेषांक की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि आपने उत्तर प्रदेश के लगभग हर क्षेत्र को स्पर्श किया, उसकी नब्ज को टटोला और प्रदेश के विकास के विभिन्न आयामों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से पाठकों के समक्ष रखा। यूँ तो सभी लेख पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं, किंतु कुछ लेखों ने विशेष रूप से प्रभावित किया। डॉ. आभा सिंह का 'लोकल से ग्लोबल' विषय पर लेख अत्यंत रोचक एवं प्रेरणादायक लगा। इसमें 'एक जनपद, एक उत्पाद' योजना के माध्यम से प्रत्येक जिले की विशिष्ट पहचान, पारंपरिक कला एवं स्थानीय उत्पादों को पुनर्जीवित कर राष्ट्रीय ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने के प्रयासों का सुंदर चित्रण किया गया है। इसी प्रकार सुनीता निगम द्वारा महिला उद्यमियों पर लिखा गया लेख भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। संपूर्ण विशेषांक में विषयों का चयन, उनकी प्रस्तुति तथा भाषा की सहजता अत्यंत प्रशंसनीय है।

–श्रीमती अर्चना मित्तल सेक्टर 72 नोएडा

***सूचना : सुधी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि पत्रिका के अध्ययन उपरांत वे इसके विषय–वस्तु, प्रस्तुति एवं कलेवर के संबंध में अपनी बहुमूल्य प्रतिक्रिया अवश्य प्रेषित करें। आपकी प्रतिक्रिया हमारे लिए प्रेरणा एवं मार्गदर्शन का कार्य करेगी। चयनित प्रतिक्रियाओं को 'पाठक का कोना' स्तंभ में आपके नाम सहित प्रकाशित किया जाएगा। आप अपनी प्रतिक्रिया केशव संवाद पत्रिका की ईमेल आईडी*** keshavsamvad@gmail.com ***पर भेज सकते हैं।***

# रोजगा समाचार
# इंटर्नशिप एवं परीक्षा कार्यक्रम

**(Employment Advertisements, Internships & Examination Schedule: 01 नवम्बर – 30 नवम्बर 2026)**


~मानस वर्मा
सहायक प्रोफेसर, अर्थशास्त
दिल्ली विश्वविद्यालय


| क्रम संख्या (Seria) No.) | श्रेणी (Category) | प्रारंभ तिथि (Starting Date) | अंतिम तिथि / परीक्षा तिथि (Last Date / Exam Date) | विज्ञापन / परीक्षा का नाम (Advertisement / Exam Name) | विभाग / संगठन (Organisation) | टिप्पणी / आधिकारिक लिंक (Remarks / Official Link) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सरकारी भर्ती (Govt. Recruitment) | 06 अक्टूबर 2026 | 04 नवम्बर 2026 | DSSSB Combined Examination 2026 (Adv. No. 04/2026) – Senior Personal Assistant, Personal Assistant, Junior Judicial Assistant, Process Server, Peon/Orderly/Dak Peon | Delhi Subordinate Services Selection Board (DSSSB) | dsssb.delhi.gov.in/ dsssb-vacancies |
| 2 | शैक्षणिक भर्ती (University Recruitment) | 14 अक्टूबर 2026 | 13 नवम्बर 2026 | Assistant Professor, Associate Professor & Professor Recruitment (Adv. No. GBU/Admin/TS/2026-09) | Gautam Buddha University (GBU) | gbu.ac.in/ recruitment |
| 3 | वैज्ञानिक भर्ती (Scientific Recruitment) | – | 26 नवम्बर 2026 | ICMR – NIE, Chennai Recruitment (Adv. No. ICMR/NIE/01/2026-RPEêcl) 8 वैज्ञानिक पद (School of Public Health) | ICMR – National Institute of Epidemiology (NIE) | icmr.gov.in/ employment-opportunities |
| 4 | वैज्ञानिक भर्ती (Scientific Recruitment) | – | 16 नवम्बर 2026 | ICMR – NINE Scientist-D Recruitment (Adv. No. ICMR/NINE/01/2026-RPEêcl) 2 पद (नियमित सीधी भर्ती त) | ICMR – National Institute of Nutrition (NINE) | icmr.gov.in/ employment-opportunities |
| 5 | रेलवे भर्ती (Railway Recruitment) | – | 06 नवम्बर 2026 (रात 11:59 बजे तक) | RRB NTPC (Graduate Level) – CEN 06/2026 कुल पद – 3,548 (Chief Commercial-cum-Ticket Supervisor, Goods Train Manager, Junior Accounts Assistant-cum-Typist, Senior Clerk-cum-Typist) | Railway Recruitment Boards (RRBs) | rrbcdg.gov.in |
| 6 | परीक्षा (Examination) | 01 नवम्बर 2026 | 01 नवम्बर 2026 (संभावित परीक्षा तिथि) | IBPS Specialist Officers (SPL-XVI) Main Examination 2026 | Institute of Banking Personnel Selection (IBPS) | ibps.in |
| 7 | परीक्षा (Examination) | 21 नवम्बर 2026 | 22 नवम्बर 2026 (संभावित परीक्षा तिथि) | IBPS RRB Officers Scale I Preliminary Examination 2026 | Institute of Banking Personnel Selection (IBPS) | ibps.in |
| 8 | परीक्षा (Examination) | नवम्बर 2026 (संभावित) | नवम्बर 2026 (संभावित) | SSC Multi-Tasking (Non-Technical) Staff & Havaldar Examination 2026 | Staff Selection Commission (SSC) | ssc.gov.in |
| 9 | परीक्षा (Examination) | नवम्बर 2026 (संभावित) | नवम्बर 2026 (संभावित) | SSC Sub-Inspector in Delhi Police & CAPFs Examination 2026 (Paper I) | Staff Selection Commission (SSC) | ssc.gov.in |
| 10 | इंटर्नशिप (Internship) | 16 अक्टूबर 2026 | 16 नवम्बर 2026 | Academic Project Work (ME/MTech/Integrated MTech/MSc/BS-MS) | Vikram Sarabhai Space Centre (VSSC/ISRO) | vssc.internship.vssc.gov.in |
| 11 | इंटर्नशिप (Internship) | 01 नवम्बर 2026 | 31 दिसम्बर 2026 | Internship Scheme 2026 | Ministry of Environment, Forest and Climate Change (MoEF&CC) | portals.moef.gov.in/ internship |
| 12 | इंटर्नशिप (Internship) | – | 16 – 27 नवम्बर 2026 (कार्यक्रम अवधि) | Online Short Term Internship Programme – November 2026 | National Human Rights Commission (NHRC) | nhrc.nic.in |
| 13 | अनुसंधान प्रशिक्षम (Research Training) | – | 06 नवम्बर 2026 | ICMR–NIE Dissertation Training (6 Months) for PG Students (Life Sciences, Public Health, Bioinformatics) | ICMR – NIE | icmr.gov.in |
| 14 | इंटर्नशिप (Internship) | – | 10 नवम्बर 2026 (संस्थान द्वारा अनुसंसा) | NHAI Winter Internship 2026–27 (Term: Dec 2026 – Jan 2027) | National Highways Authority of India (NHAI) | nhai.gov.in |

## इस माह के प्रमुख अवसर (Highlights of the Month)

### प्रमुख भर्तियां (Recruitments)

- DSSSB Combined Exam 2026
- RRB NTPC (Graduate Level)
- Gautam Buddha University Faculty Recruitment
- ICMR–NIE & ICMR–NINE Scientific Posts

### प्रमुख इंटर्नशिप (Internships)

- MoEF&CC Internship Scheme 2026
- NHRC Short Term Internship (16–27 Nov)
- VSSC Academic Project Work
- NHAI Winter Internship 2026–27

### प्रमुख परीक्षाएँ (Examinations)

- IBPS Specialist Officers (SPL-XVI) Main Exam
- IBPS RRB Officers Scale I Preliminary
- SSC MTS & Havaldar
- SSC Sub-Inspector (Delhi Police & CAPFs)

## संकलित स्रोत (Compiled Sources)

- DSSSB – dsssb.delhi.gov.in
- RRB – rrbcdg.gov.in
- Gautam Buddha University – gbu.ac.in
- ICMR – icmr.gov.in
- NHRC – nhrc.nic.in
- MoEF&CC – portals.moef.gov.in
- VSSC/ISRO – vssc.internship.vssc.gov.in
- NHAI – nhai.gov.in
- IBPS – ibps.in
- SSC – ssc.gov.in

## महत्वपूर्ण सूचना

- आवेदन से पहले आधिकारिक विज्ञापन अवश्य पढ़ें।
- अंतिम तिथि से पहले आवेदन करें।
- परीक्षा तिथियाँ संभांतित / आयोग के कैलेंडर के अनुसार हैं।
- यह सूची नवम्बर 2026 के प्रमुख अवसरों पर आधारित है, यह भारत के सभी विज्ञापनों की सम्पूर्ण सूची नहीं है।

**सशक्त युवा – सशक्त भारत**

*Only Design is AI Generated*

# प्रेरणा विमर्श 2026 कार्यक्रम की झलकियां











